DAWAT-E-ISLAMI

चन्दा जम्अ़ करने के दौरान ह़क़ीक़ी या इम्कानी
ग़-लतियों से बचाने वाली फ़िक्र अंगेज़ तह़रीर

Chanda Karne Ki Shar-ee Ehtiyaaten (Hindi)

चन्दा करने की शर-ई एह़तियातें

المدينة العلمية
(دعوت اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

चन्दा करने की शर-ई एह़तियातें

येह रिसाला (**चन्दा करने की शर-ई एह़तियातें**)

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस,
अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदआबाद-1, गुजरात MO. 9374031409
E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

चन्दा करने की शर-ई एह़तियातें

म-दनी अ़ति़य्यात जम्अ़ करने वाले तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें लाज़िमन इस रिसाले का मुत़ा-लआ़ कीजिये ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो सुब्ह़ व शाम मुझ पर दस दस बार दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा बरोज़े क़ियामत मेरी शफ़ाअ़त उसे पहुंच

www.dawateislami.net

कर रहेगी। (الترغیب والترھیب، ۱/ ۱۶۲، حدیث: ۹۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के शो'बाजात का मुख़्तसर तआ़रुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जुमादल उख़रा 1437 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ मार्च **2016 सि.ई.** तक की मा'लूमात के मुत़ाबिक़ मुल्क व बैरूने मुल्क में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़्त सेंकड़ों **जामिआ़तुल मदीना** (लिल बनीन व लिल बनात) क़ाइम हैं जिन में हज़ारों त़-लबा व त़ालिबात दर्से निज़ामी कर रहे हैं, नीज़ हज़ारों **मदारिसुल मदीना** (लिल बनीन व लिल बनात) भी क़ाइम हैं जिन में **एक लाख से ज़ाइद** म-दनी मुन्ने और म-दनी मुन्नियां

www.dawateislami.net

ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम ह़ासिल कर रहे हैं। **म-दनी तरबियत गाहें, मुख़्तलिफ़ तरबियती कोर्सिज़** (म-सलन फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स, इमामत कोर्स, मुदर्रिस कोर्स, म-दनी तरबियती कोर्स, म-दनी इन्आ़मात व म-दनी क़ाफ़िला कोर्स, कुफ़्ले मदीना कोर्स, फ़ैज़ाने इस्लाम कोर्स, फ़ैज़ाने कुरआनो ह़दीस कोर्स, **12** रोज़ा म-दनी कोर्स वग़ैरा), **म-दनी चेनल** जो कि बे शुमार मुसल्मानों की इस्लाह़ और कुफ़्फ़ार के क़बूले इस्लाम का सबब बन रहा है नीज़ इस के ज़रीए लाखों लाख आ़शिक़ाने रसूल इ़ल्मे दीन से मालामाल हो रहे हैं, म-दनी चेनल पर **र-मज़ानुल मुबारक** में रोज़ाना दो मर्तबा और इ़लावा र-मज़ान हफ़्ते में एक बार (बरोज़ हफ़्ता), नीज़ इस के इ़लावा भी वक़्तन फ़ वक़्तन म-दनी मुज़ा-करे बराहे रास्त नश्र किये जाते हैं। **दारुल मदीना,**

www.dawateislami.net

कई दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, अल मदीनतुल इल्मिय्या, मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या जिस से माहाना लाखों लाख मुसल्मान मुस्तफ़ीज़ हो रहे हैं, इस के इलावा सेंकड़ों **म-दनी मराकिज़** (या'नी फ़ैज़ाने मदीना) और कसीर मसाजिद की ता'मीरात व इन्तिज़ामात, मदारिसुल मदीना ऑन लाइन, इसी त़रह़ सेंकड़ों **हफ़्तावार इज्तिमाआ़त, बड़ी रातों** (म-सलन शबे मीलाद, ग्यारहवीं शरीफ़, शबे मे'राज, शबे बराअत और र-मज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं शब वग़ैरा) के इज्तिमाआ़त, पूरे माहे र-मज़ान का **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** सेंकड़ों मक़ामात पर और **आख़िरी अ़-शरे का सुन्नते ए'तिकाफ़ हज़ारों** मक़ामात पर होता है, जिन में हज़ारहा इस्लामी भाई मो'तकिफ़ होते हैं, ग़रज़ येह कि मुनज़्ज़म त़रीक़े से म-दनी कामों को आगे बढ़ाने के लिये दा'वते इस्लामी के

www.dawateislami.net

तह्त तक़्रीबन **102 शो'बाजात** क़ाइम हैं जिन के लिये ख़तीर रक़म दरकार होती है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वैसे तो बिल उ़मूम सारा ही साल दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिये म-दनी अ़तिय्यात जम्अ़ करने का सिल्सिला रहता है मगर बिल ख़ुसूस र-जबुल मुरज्जब, शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म और र-मज़ानुल मुबारक में चूंकि ब कसरत लोग स-दक़ात व अ़तिय्यात की अदाएगी की त़रफ़ माइल होते हैं इस वज्ह से इन महीनों में म-दनी अ़तिय्यात इकठ्ठा करने का बेहतरीन मौक़अ़ होता है लिहाज़ा हमें चाहिये कि न सिर्फ़ अपने म-दनी अ़तिय्यात दा'वते इस्लामी को दें बल्कि दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में मज़ीद तरक़्क़ी के लिये आज ही से भरपूर कोशिश करते हुए दीगर इस्लामी भाइयों से भी म-दनी अ़तिय्यात (ज़कात, फ़ित्रा, स-दक़ात, ख़ैरात वग़ैरा) जम्अ़ करने की तरकीब बनाएं।

www.dawateislami.net

याद रखिये कि मौजूदा दौर में दीनी कामों के लिये चन्दा (म-दनी अ़त़िय्यात) जम्अ़ करना अशद ज़रूरी है । रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ग़ैब निशान है : **''आख़िर ज़माने में दीन का काम भी दिरहम व दीनार से होगा ।''**

(معجم کبیر، ۲۰/۲۷۹، حدیث:۶۶۰)

चूंकि मज़्हबी व फ़लाह़ी काम अक्सर चन्दे ही के ज़रीए़ होते हैं लिहाज़ा मुस्तक़िल त़ौर पर उन्हें जारी रखने के लिये चन्दा तो जैसे तैसे कर ही लिया जाता है मगर इ़ल्मे दीन की कमी के बाइ़स एक बहुत बड़ी ता'दाद इस के जम्अ़ करने में शर-ई ग़-लत़ियां कर के गुनाहों में जा पड़ती है । याद रखिये ! चन्दा वुसूल करने वालों के लिये चन्दे के ज़रूरी मसाइल का सीखना फ़र्ज़ है । लिहाज़ा

www.dawateislami.net

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** के वसीअ़ तर मफ़ाद के पेशे नज़र मजलिसे मालियात की त़रफ़ से नेकियां कमाने और मुसल्मानों को गुनाहों से बचाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करने वाले इस्लामी भाइयों के लिये स-दक़ा करने और अ़त़िय्यात जम्अ़ करने के फ़ज़ाइल, अ़त़िय्यात में ख़ियानत की वईदों और अ़त़िय्यात से मु-तअ़ल्लिक़ अहम तन्ज़ीमी व शर-ई मसाइल के बारे में सुवालन जवाबन मा'लूमात पेशे ख़िदमत हैं :

राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की फ़ज़ीलत

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला ने अपने पाक कलाम में स-दक़ा व ख़ैरात करने की तरग़ीब यूं इर्शाद फ़रमाई है :

www.dawateislami.net

وَ اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ وَ اَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَ مَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَیْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَیْرًا وَّ اَعْظَمَ اَجْرًا ؕ

(پ ۲۹، المزمل: ۲۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और **अल्लाह** को अच्छा क़र्ज़ दो और अपने लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे **अल्लाह** के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे।

सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : ''ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि इस क़र्ज़ से मुराद ज़कात के सिवा राहे ख़ुदा में ख़र्च करना और सिलए रेह़्मी में और मेहमान दारी में और येह भी कहा गया कि इस से तमाम

www.dawateislami.net

स-दक़ात मुराद हैं जिन्हें अच्छी त़रह़ माले ह़लाल से ख़ुशदिली के साथ राहे ख़ुदा में ख़र्च किया जाए।

ह़ज़रते का'ब बिन उ़जरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''नमाज़ (ईमान की) दलील है और रोज़ा (गुनाहों से) ढाल है और स-दक़ा कोताहियों को यूं मिटा देता है जैसे आग को पानी।''

(ترمذی، کتاب السفر، باب ما ذُکِر فی فضل الصلاۃ، ۲/۱۱۸، حدیث:۶۱۴)

मिश्कात शरीफ़ की शर्ह़ में है : बेशक स-दक़ा जहन्नम से ढाल है और जन्नत की त़रफ़ वसीला है।

(مرقاۃ المفاتیح، ۹/۴۹۰، تحت الحدیث:۵۵۵۰)

अ़त़िय्यात जम्अ़ करने की फ़ज़ीलत

बा'ज़ इस्लामी भाई म-दनी अ़त़िय्यात इकठ्ठा

www.dawateislami.net

करने में झिजक महसूस करते हैं ह़ालां कि दीन की सर बुलन्दी के लिये चन्दा इकठ्ठा करना सरवरे अम्बिया, ह़बीबे किब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत से साबित है। ग़ज़्वए तबूक, मस्जिदे न-बवी शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ता'मीर, बीरे रूमा की ख़रीदारी वग़ैरा के मवाक़ेअ़ पर सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की तरग़ीब दिलाई लिहाज़ा आप भी हिम्मत कीजिये, झिजक उड़ाइये और एह़याए सुन्नत के लिये ख़ूब ख़ूब म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ कीजिये। आइये तरग़ीब के लिये एक ह़दीसे मुबा-रका मुला-ह़ज़ा कीजिये :

ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه

www.dawateislami.net

से मरवी है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये ह़क़ के मुत़ाबिक़ स-दक़ा वुसूल करने वाला अपने घर लौटने तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले ग़ाज़ी की त़रह़ है। (ابو داؤد، کتاب الخراج ...الخ،باب فی السعایة ...الخ، ۳/۲۳۵، حدیث:۳۶۲۹)

अ़त़िय्यात में ख़ियानत पर वईद

राह़ते क़ल्बे नाशाद, रसूले करीमो जव्वाद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है : ''कुछ लोग **अल्लाह** तआ़ला के माल में नाह़क़ तसर्रुफ़ करते हैं, क़ियामत के दिन उन के लिये जहन्नम है।'' (بخاری، کتاب فرض الخمس ،باب قول اللّٰہ تعالی (فَاِنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ)، ۲/ ۳۴۸، حدیث:۳۱۱۸)

ह़ज़ूर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : कितने ही लोग जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस के रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के माल में से जिस चीज़ को उन का दिल चाहता है अपने तसर्रुफ़ में ले आते हैं क़ियामत के दिन उन के लिये दोज़ख़ की आग है।

(ترمذی، کتاب الزهد، باب ماجاء فی اخذ المال، ۱۶۵/۴، حدیث: ۲۳۸۱)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़रफ़ से तमाम आ़शिक़ाने रसूल को ख़ुसूसी ताकीद

जो इस्लामी भाई या इस्लामी बहनें चन्दा इकट्ठा करें उन्हें चन्दे के ज़रूरी अह्काम मा'लूम होना फ़र्ज़ है, हर एक की ख़िदमत में ताकीद है कि अगर पढ़ चुके हैं तब भी दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 107 सफ़ह़ात

www.dawateislami.net

पर मुश्तमिल किताब, ''चन्दे के बारे में सुवाल जवाब'' का दोबारा मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये ।

अ़त़िय्यात जम्अ़ करने की निय्यतें

सुवाल - म-दनी अत़िय्यात जम्अ़ करते वक़्त निय्यत क्या होनी चाहिये ?

जवाब - 1﴾ फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (معجم کبیر، ۱۸۵/۲، حدیث: ۵۹۴۲) इस लिये दा'वते इस्लामी का हर ज़िम्मादार अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा **''म-दनी इन्आ़मात''** में से **''म-दनी इन्आ़म नम्बर 1''** पर अ़मल करते हुए येह निय्यत करे कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और उस के प्यारे ह़बीब

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी की ख़ात़िर तब्लीग़े दीन और इस्लाहे़ मुआ़-शरा में मुआ़-वनत के लिये म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

म-दनी इन्आ़मात से अ़त्त़ार हम को प्यार है
اِنْ شَآءَاللّٰه दो जहां में अपना बेड़ा पार है

2 (येह निय्यत भी करनी चाहिये कि) म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करने में मद्दात का ख़ास ख़याल रखते हुए जो रक़म जिस मद में वुसूल होगी उसी मद में इन्दिराज कर के लोगों के अ़त़िय्यात की शरीअ़त के मुत़ाबिक़ दुरुस्त त़ौर पर अदाएगी करवाने में मुआ़-वनत करूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

म-दनी अ़त़िय्यात की अक़साम

सुवाल – उ़मूमन कितनी क़िस्म के म-दनी अ़त़िय्यात दा'वते इस्लामी को मौसूल होते हैं ?

www.dawateislami.net

जवाब दा'वते इस्लामी को उ़मूमन तीन क़िस्म के म-दनी अ़तिय्यात मौसूल होते हैं। (1) वाजिबा (2) नाफ़िला (3) मद्दाते मख़्सूसा

अ़तिय्याते वाजिबा इन में ज़कात, फ़ित्रा, उ़श्र, उ़श्र की रक़म, क़सम के कफ़्फ़ारे, रोज़ों के फ़िदये, नमाज़ों के फ़िदये, मन्नते वाजिबा की रक़म और ह़ज या उ़म्रे के स-दक़े की रक़म भी शामिल है।

अ़तिय्याते नाफ़िला इन में स-दक़ा, ख़ैरात और हदिय्या वग़ैरा शामिल हैं।

मद्दाते मख़्सूसा इस में मस्जिद, जामिअ़तुल मदीना, मद्र-सतुल मदीना और फ़ैज़ाने मदीना की ता'मीरात

www.dawateislami.net

व दीगर अख़राजात नीज़ लंगरे र-ज़विय्या के लिये ख़ास तौ़र पर दिये जाने वाले म-दनी अ़ति़य्यात शामिल हैं।

म-दनी अ़ति़य्यात जम्अ़ करने के त़रीक़े और एह़तियातें

सुवाल म-दनी अ़ति़य्यात जम्अ़ करने के लिये कोई ऐसा त़रीक़ए कार बयान कर दीजिये कि जिस से म-दनी अ़ति़य्यात में इज़ाफ़ा हो सके।

जवाब म-दनी अ़ति़य्यात में इज़ाफ़े के लिये दो त़रह़ की फ़ेहरिस्तें बनाई जाएं। **(1) इन्फ़िरादी (2) इज्तिमाई**

इन्फ़िरादी फ़ेहरिस्त इन्फ़िरादी तौ़र पर येह कि हर इस्लामी भाई मुल्क व बैरूने मुल्क में रहने वाले अपने

www.dawateislami.net

ख़ानदान के अफ़राद, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब, दूर और क़रीब के रिश्तेदार, पड़ोसी, मह़ल्लेदार, दोस्त अह़बाब व दीगर मु-तअ़ल्लिक़ीन की फ़ेहरिस्तें बनाए ताकि मौक़अ़ आने पर उन से म-दनी अ़त़िय्यात ह़ासिल किये जा सकें।

इज्तिमाई फ़ेहरिस्त इज्तिमाई त़ौर पर येह कि हर निगरान म-सलन निगराने काबीनात/काबीना/शह्र/ डिवीज़न/अ़लाक़ा/ह़ल्क़ा/ज़ैली ह़ल्क़ा मुशा-वरत मुख़य्यर ह़ज़रात (ताजिर, मिल मालिकान, ज़मीनदार वग़ैरा) की फ़ेहरिस्त तय्यार करे और मजलिसे मालियात के पास शख़्सय्यात रेकॉर्ड रजिस्टर में उस का इन्दिराज भी करवाए ताकि इन तमाम शख़्सय्यात का रेकॉर्ड मह़फ़ूज़ किया जा सके और हर साल राबित़ा करने में आसानी रहे।

www.dawateislami.net

इन्फ़िरादी त़ौर पर म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करने का त़रीक़ा

सब से पहले तो अपने घर से ज़कात, फ़ित्रा, उ़श्र, स-दक़ात वग़ैरा की तरकीब बनाइये ❁ इस के बा'द रिश्तेदारों, महल्ले दारों और दोस्त अह़बाब वग़ैरा से बिल मुशाफ़ा मुलाक़ात कर के या फिर मक्तूब, SMS या E Mail वग़ैरा के ज़रीए़ उन्हें राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल बता कर म-दनी अ़त़िय्यात देने की तरग़ीब दिलाइये और मुम्किना सूरतों में हाथों हाथ जम्अ़ भी फ़रमाइये, मुलाक़ात के म-दनी फूल इसी रिसाले के सफ़ह़ा 24 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये ❁ जो शख़्सय्यात माहाना कुछ न कुछ दा'वते इस्लामी को म-दनी अ़त़िय्यात देने की निय्यत कर लें उन का नाम, पता और फ़ोन नम्बर वग़ैरा की तफ़्सीलात मजलिसे मालियात को दे दीजिये ताकि मुम्किना सूरतों में उन से हर माह वुसूली की तरकीब की जा सके ❁ हर

www.dawateislami.net

इस्लामी भाई को अपना येह म-दनी ज़ेह्न बनाना चाहिये कि मैं रोज़ाना या हफ़्तावार या फिर माहाना अपनी आमदनी में से कुछ न कुछ म-दनी अ़त़िय्यात दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिये हर नेक व जाइज़ काम में ख़र्च करने की इजाज़त के साथ जम्अ़ कराऊंगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

घरेलू स-दक़ा बक्स व म-दनी अ़त़िय्यात बक्स की तरग़ीब

मुम्किना सूरतों में अपने और अपने जानने वालों के घरों में "**घरेलू स-दक़ा बक्स**" की भी तरकीब बनाइये और उन "**घरेलू स-दक़ा बक्स**" में जम्अ़ होने वाले म-दनी अ़त़िय्यात अपने त़ौर पर मु-तअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादार को जम्अ़ करवा कर रसीद ज़रूर ह़ासिल फ़रमाइये ❁ मौक़अ़ की मुना-सबत से दीगर इस्लामी भाइयों को भी अपने घरों

www.dawateislami.net

में "**घरेलू स-दक़ा बक्स**" और दुकानों में "**म-दनी अ़त़िय्यात बक्स**" रखने की तरग़ीब दिलाइये और इन का राबित़ा मजलिसे म-दनी अ़त़िय्यात बक्स के ज़िम्मादारान में से किसी से करवा दीजिये ताकि येह सिल्सिला जारी रहे।

इज्तिमाई त़ौर पर म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करने का त़रीक़ा

काबीनात/काबीना/शह्र/डिवीज़न/अ़लाक़ा/ह़ल्क़ा/ज़ैली सत़्ह़ पर ज़िम्मादारान म-दनी मश्वरों के ज़रीए़ मर्कज़ी मजलिसे शूरा या मु-तअ़ल्लिक़ा रुक्ने शूरा की त़रफ़ से त़ै किये गए अहदाफ़ अपने इस्लामी भाइयों में तक़्सीम फ़रमाएं, नीज़ म-दनी अ़त़िय्यात की तरग़ीब दिलाने के लिये सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त म-सलन शख़्सिय्यात इज्तिमाआ़त या ताजिर इज्तिमाआ़त का भी इन्इ़क़ाद

www.dawateislami.net

फ़रमाएं और ज़िम्मादारान अपनी अपनी ज़िम्मादारी और मन्सब के मुत़ाबिक़ म-दनी अ़त़िय्यात के हदफ़ को पूरा करने में मसरूफ़ हो जाएं बल्कि हदफ़ से ज़ाइद म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करवाने की कोशिश फ़रमाएं ❁ कोशिश कीजिये कि दा'वते इस्लामी से मह़ब्बत करने वाला हर शख़्स अपने मुस्तह़िक़ रिश्तेदारों को देने के बा'द अपने घर के अ़त़िय्यात म-सलन ज़कात, फ़ित्रा, स-दक़ात वग़ैरा दा'वते इस्लामी को ही जम्अ़ करवाए।

म-दनी अ़त़िय्यात के लिये बेनर्ज़ वग़ैरा की तरकीब

इस्लामी बहनों के हफ़्तावार इज्तिमाआ़त वग़ैरा में भी म-दनी अ़त़िय्यात के ए'लान, तरग़ीब, बेनर और बस्ते की तरकीब हो और ज़ैली ह़ल्क़ा या ह़ल्क़ा मुशा-वरत की ज़िम्मादार इस्लामी बहन वहीं हाथों हाथ म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ कर के तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ म-दनी मर्कज़

www.dawateislami.net

को जम्अ़ करवाए ❀ जहां म-दनी अ़तिय्यात के बेनर्ज़ मक-त-बतुल मदीना पर दस्त-याब हों तो अज़ खुद मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमाएं और जहां तरकीब मुम्किन न हो तो बेनर्ज़ के अख़राजात के लिये मु-तअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादार के ज़रीए़ से मालियात ज़िम्मादार या मालियात मक्तब से राबित़ा फ़रमाएं, बेनर्ज़ की ख़रीदारी के लिये अज़ खुद म-दनी अ़तिय्यात हरगिज़ इस्ति'माल न फ़रमाएं । ❀ र-मज़ानुल मुबारक में होने वाले **इज्तिमाई सुन्नते ए'तिकाफ़** में मो'तकिफ़ीन इस्लामी भाइयों को भी ज़कात, फ़ित्रा, स-दक़ात और हदिय्ये वग़ैरा जम्अ़ करवाने की तरग़ीब दिलाइये ❀ **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और बड़ी रातों के इज्तिमाआ़त** म-सलन मीलाद शरीफ़, ग्यारहवीं शरीफ़, मे'राज शरीफ़, शबे बराअत और र-मज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं

www.dawateislami.net

शब व दीगर बड़े इज्तिमाआ़त और तरबियती निशस्तों में भी चूंकि इस्लामी भाइयों की कसीर ता'दाद होती है लिहाज़ा इन मवाक़ेअ़ पर भी म-दनी अ़त़िय्यात की तरग़ीब दिलाइये, बेनर्ज़ आवेज़ां कीजिये, बस्ते लगाइये और मुम्किना सूरतों में तरबियत याफ़्ता इस्लामी भाइयों के ज़रीए़ झोली की भी तरकीब बनाइये, झोली से मु-तअ़ल्लिक़ तफ़्सीली म-दनी फूल सफ़्हा 42 पर मुला-हज़ा फ़रमाइये ❁ माहे र-मज़ानुल मुबारक में जिन जिन नमाज़ों के अवक़ात में मुम्किन हो मस्जिद के बाहर म-दनी अ़त़िय्यात के लिये बस्ते की तरकीब बनाइये बिल ख़ुसूस जुमुआ़ के दिन नमाज़े जुमुआ़ में तो लाज़िमी इस का एहतिमाम कीजिये ❁ जामिआ़तुल मदीना, मदारिसुल मदीना और दारुल मदीना के त़-लबा नीज़ मुदर्रिसीन, नाज़िमीन, मुफ़त्तिशीन और मजालिस के म-दनी मश्वरे कर के उन्हें म-दनी

www.dawateislami.net

अ़त़िय्यात जम्अ़ करने के अहदाफ़ दीजिये, त़-लबा छोटे हों तो सिर्फ़ उन के वालिदैन या सर-परस्त को और अगर त़-लबा बड़े हों तो वालिदैन या सर-परस्त के साथ साथ उन त़-लबा को भी हदफ़ दीजिये और इस रिसाले की रोशनी में म-दनी अ़त़िय्यात इकट्ठा करने की तरग़ीब दिलाइये इसी त़रह़ ज़िम्मादार इस्लामी बहनें भी तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ मुदर्रिसात, नाज़िमात, मुफ़त्तिशात और त़ालिबात वग़ैरा के म-दनी मश्वरे कर के उन्हें अहदाफ़ दें

- निगराने काबीना के मश्वरे से अपने डिवीज़न/शह्र/अ़लाक़े में म-दनी अ़त़िय्यात मुहिम जारी कीजिये।

म-दनी अ़त़िय्यात के लिये मुलाक़ात के म-दनी फूल

- ज़िम्मादारान को चाहिये कि दा'वते इस्लामी के म-दनी

www.dawateislami.net

अ़त़िय्यात के लिये ख़ुश अ़क़ीदा शख़्सिय्यात व मुख़य्यर ह़ज़रात से पेशगी वक़्त ले कर उन से मुलाक़ात की तरकीब बनाएं ।

❁ बेहतर येह है कि मुलाक़ात के लिये दो या तीन इस्लामी भाई मिल कर जाएं इस्लामी बहनें भी इसी त़रह़ करें ।

❁ दौराने मुलाक़ात शख़्सिय्यात व मुख़य्यर ह़ज़रात को **दा'वते इस्लामी** के मुख़्तलिफ़ म-दनी कामों और शो'बाजात म-सलन मद्र-सतुल मदीना, जामिअ़तुल मदीना, दारुल मदीना स्कूल सिस्टम, मसाजिद की ता'मीरात, म-दनी क़ाफ़िला, म-दनी चेनल, शो'बए ता'लीम, मजलिसे आई टी, दा'वते इस्लामी की वेबसाइट (www.dawateislami.net), मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी भाई, मजलिसे इस्लाह़ बराए क़ैदियान वग़ैरा का तआ़रुफ़ करवाएं नीज़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दीनी ख़िदमात से भी आगाह कीजिये।

❁ दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों पर सर्फ़ होने वाले अख़राजात बता कर दा'वते इस्लामी के हर नेक व जाइज़ काम में ख़र्च की निय्यत से माहाना म-दनी अ़ति़य्यात देने का ज़ेह्न बनाइये।

❁ मुम्किन हो तो शख़्सय्यात के यहां मजलिसे "म-दनी अ़ति़य्यात बक्स" की मुशा-वरत व इजाज़त से म-दनी फूलों के मुत़ाबिक़ म-दनी अ़ति़य्यात बक्स (Box) रखने की भी तरकीब बनाइये।

❁ दौराने मुलाक़ात इख़्तिलाफ़ी मसाइल, फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू और सियासी मुआ़-मलात पर कलाम करने से मुकम्मल इज्तिनाब कीजिये।

www.dawateislami.net

❁ **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए ख़ौफ़े ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ), इ़श्क़े मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم), इख़्लास और अख़्लाक़े ह़-सना से मु-तअ़ल्लिक़ गुफ़्त-गू कीजिये, नीज़ अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और सह़ाबा व औलिया عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की इस्लाम की ख़ात़िर क़ुरबानियों और इस्लाह़े उम्मत के लिये दा'वते इस्लामी और बानिये दा'वते इस्लामी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के किरदारे बा सफ़ा जैसे उ़न्वानात ही को मौज़ूए़ सुख़न बनाइये।

❁ ह़दीसे पाक में है : ''تَهَادَوْا تَحَابُّوا'' या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، ۲/۴۰۷، حدیث:۱۷۳۱) इस ह़दीसे पाक पर अ़मल की निय्यत से ज़ाती त़ौर पर ह़स्बे इस्तित़ाअ़त म-दनी अ़त़िय्यात देने वाली शख़्सिय्यात को मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ कुतुबो रसाइल म-सलन ''**दा'वते इस्लामी**

www.dawateislami.net

की झल्कियां'' रिसाला और VCD's वग़ैरा भी तोह़्फ़तन पेश करें। याद ! रहे कि म-दनी अ़त़िय्यात से तोह़्फ़ा देने की इजाज़त नहीं नीज़ ज़ाती तअ़ल्लुक़ात बनाने के बजाए रिज़ाए इलाही और तन्ज़ीमी कामों में तरक़्क़ी की निय्यत ही से तोह़्फ़ा दिया जाए।

❁ शख़्सिय्यात व मुख़्य्यर ह़ज़रात को म-दनी चेनल देखने नीज़ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ और म-दनी मुज़ा-करे में शिर्कत की तरग़ीब भी दिलाएं।

❁ म-दनी अ़त़िय्यात के महीनों (या'नी रजब, शा'बान और र-मज़ान) के इलावा भी शख़्सिय्यात व मुख़्य्यर ह़ज़रात से मुलाक़ात और राबित़े की तरकीब रखते हुए उन्हें म-दनी माह़ोल से वाबस्ता करने के लिये इन्फ़िरादी कोशिशों का सिल्सिला जारी रखिये।

www.dawateislami.net

म-दनी अ़ति़य्यात के बस्ते लगाने के म-दनी फूल

❁ म-दनी अ़ति़य्यात के बस्तों पर ज़िम्मादार मुक़र्रर किये जाएं और उन की तरबियत का एहतिमाम भी किया जाए।

❁ म-दनी अ़ति़य्यात के बस्तों के लिये मेज़, कुर्सी वग़ैरा का एहतिमाम कीजिये। मुम्किना सूरतों में किराए पर लेने के बजाए अपने या किसी अहले मह़ब्बत के घर से तरकीब बना लीजिये अगर येह मुम्किन न हो तो अख़राजात के लिये अपने मु-तअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादार के ज़रीए मालियात ज़िम्मादार या मालियात मक्तब से राबित़ा फ़रमाइये।

❁ मुम्किन हो तो म-दनी अ़ति़य्यात के बस्तों पर मेगाफ़ोन का एहतिमाम भी कीजिये मगर इस बात का ख़ास ख़याल रखें कि आवाज़ इस क़दर बुलन्द न हो कि उस से लोगों को तक्लीफ़ पहुंचे।

www.dawateislami.net

❀ म-दनी अ़ति़य्यात के बस्तों पर मुनासिब रोशनी का भी एहतिमाम फ़रमाएं, लेकिन इस के लिये मस्जिद या मद्रसे से बिजली हरगिज़ हरगिज़ न ली जाए कि शरअ़न इस की इजाज़त नहीं।

❀ म-दनी अ़ति़य्यात के बस्तों पर खुले पैसे भी रखे जाएं ताकि अ़ति़य्यात की वुसूली में किसी क़िस्म की परेशानी न हो, इस का मुनासिब त़रीक़ा येह है कि मद्दाते वाजिबा और नाफ़िला में से कुछ बड़े नोटों को खुला करवा कर अलग अलग रख लीजिये और बक़ाया रक़म की वापसी उसी मद की रक़म से कीजिये।

❀ अपनी जेब से अगर खुले पैसे लें तो किसी को गवाह बना लीजिये और रजिस्टर या कॉपी में भी लाज़िमी त़ौर पर लिख लीजिये ताकि अ़ति़य्यात के इन्दिराज और अदाएगी में किसी क़िस्म की आज़्माइश और परेशानी का सामना

www.dawateislami.net

न हो।

❁ बस्तों पर मुनासिब ता'दाद में रसीद बुक रखने का भी एहतिमाम कीजिये ताकि अ़त़िय्यात देने वाले को बर वक़्त रसीद पेश की जा सके।

❁ रसीद बुक इन्तिहाई ह़िफ़ाज़त से रखिये ताकि किसी ग़लत़ हाथ में न जा सके।

❁ म-दनी अ़त़िय्यात के बस्तों पर डायरी, कॉपी, रजिस्टर या म-दनी पेड वग़ैरा नीज़ क़लम रखने का भी एहतिमाम फ़रमाएं और हाथों हाथ रसीद बुक पर इन्दिराज के साथ साथ डायरी वग़ैरा में भी इन्दिराज फ़रमाते रहिये ताकि मद्दात में किसी क़िस्म की ग़-लत़ी का अन्देशा न रहे।

❁ जिस डायरी या म-दनी पेड वग़ैरा पर अ़त़िय्यात का इन्दिराज फ़रमाएं उसे भी ह़िफ़ाज़त से रखें ताकि ब वक़्ते ज़रूरत उस के ज़रीए़ दरपेश मस्अले को ह़ल किया जा

www.dawateislami.net

सके।

❀ म-दनी अ़ति़य्यात के हर बस्ते पर ''दा'वते इस्लामी के खि़दमते दीन के 102 शो'बाजात'' वाला पेम्फ़लेट और रिसाला ''**इस्लाहे़ उम्मत में दा'वते इस्लामी का किरदार**'' और ''**दा'वते इस्लामी की झल्कियां**'' मुनासिब ता'दाद में रखे जाएं, ह़दीसे पाक में है : ''**تَهَادَوْا تَحَابُّوا**'' या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، کتاب حسن الخلق، باب ماجاء فی المھاجرۃ، ۲/۴۰۷، حدیث:۱۷۳۱) इस ह़दीसे पाक पर अ़मल की निय्यत से ज़ाती तौ़र पर ह़स्बे इस्तिता़अ़त म-दनी अ़ति़य्यात देने वाली शख़्सिय्यात और बस्ते पर आने वालों को तोह़्फ़तन पेश किये जाएं। याद रहे कि म-दनी अ़ति़य्यात से म-दनी तोह़फ़ा देने की इजाज़त नहीं, नीज़ ज़ाती तअ़ल्लुक़ात बनाने के लिये तोह़फ़ा देने की निय्यत नहीं होनी चाहिये।

www.dawateislami.net

❀ म-दनी अ़तिय्यात के बस्तों पर जम्अ़ शुदा म-दनी अ़तिय्यात की हि़फ़ाज़त का भी एहतिमाम फ़रमाइये इस की एक सूरत येह भी हो सकती है कि जैसे जैसे म-दनी अ़तिय्यात केश या चेक की सूरत में जम्अ़ होते जाएं वक़्तन फ़ वक़्तन या'नी एक या दो दिन से ज़ियादा अपने पास रखने के बजाए तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ अपने मु-तअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादार या मालियात मक्तब में मद्दात की वज़ाह़त और मुकम्मल तफ़्सील के साथ म-दनी अ़तिय्यात जम्अ़ करवा कर "**म-दनी अ़तिय्यात रसीद बराए ज़िम्मादारान**" या "**रसीद बराए मक्तब**" ज़रूर ह़ासिल फ़रमाएं।

❀ म-दनी अ़तिय्यात के बस्तों पर बेनर भी आवेज़ां कीजिये जिस का नमूना दर्जे ज़ैल है :

www.dawateislami.net

बेनर का नमूना

❁ बस्ते यकुम र-मज़ान ता नमाज़े ईद रोज़ाना लगाइये जिन का दौरानिया कमो बेश **2** घन्टे या ज़ाइद हो।

❁ ख़ुसूसन आख़िरी अ़-शरे की हर रात में नुमायां, बा रौनक़ और मह़फ़ूज़ मक़ामात पर बस्ते लगाने का लाज़िमी एहतिमाम कीजिये।

❁ नमाज़े जुमुआ़ से क़ब्ल लगाए जाने वाले म-दनी अ़त़िय्यात के बस्ते जुमुआ़ की अज़ाने अव्वल शुरूअ़ होने

www.dawateislami.net

से पहले बन्द कर के अ़त़िय्यात, मद्दात, रेकॉर्ड और बस्ते का दीगर सामान ब ह़िफ़ाज़त रख लिया जाए और फिर बयान व ख़ुत़्बा और नमाज़ में शिर्कत की जाए।

❁ जिन नमाज़ों से पहले म-दनी अ़त़िय्यात के बस्ते लगाए जाएं वहां ख़ुसूसन सुन्नते क़ब्लिय्या और नमाज़े बा जमाअ़त का एहतिमाम फ़रमाइये। यूं ही फ़राइज़ से फ़ारिग़ हो कर सुन्नते बा'दिय्या अदा करने के बा'द ही बस्ता लगाइये क्यूं कि नमाज़ों का एहतिमाम हर ह़ाल में ज़रूरी है।

❁ र-मज़ानुल मुबारक की सत्ताईसवीं शब से हर नमाज़ के बा'द मसाजिद के अन्दर या बाहर (जहां इजाज़त हो) इसी त़रह़ ईदुल फ़ित्र के दिन ईदगाह और क़ब्रिस्तान के रास्तों और दाख़िली और ख़ारिजी दरवाज़ों पर भी

www.dawateislami.net

"म-दनी अ़तिय्यात" के बस्ते लगाए जाएं।

❀ जिन जगहों पर इख़्तिलाफ़ी सूरत का अन्देशा हो वहां हि़क्मते अ़-मली के तह़्त कुछ फ़ासिले पर बस्ते लगाए जाएं ताकि किसी क़िस्म के मसाइल का सामना न हो।

मद्दाते वाजिबा और मद्दाते मख़्सूसा से मु-तअ़ल्लिक़ चन्द अहम एह़तियातें

सुवाल अ़तिय्यात किन अल्फ़ाज़ के साथ वुसूल किये जाएं और रसीद बुक वग़ैरा पर उन का इन्दिराज किस त़रह़ किया जाए?

जवाब अ़तिय्यात देने वाले से अगर बराहे रास्त नफ़्ली अ़तिय्यात की वुसूली की तरकीब बन रही हो तो ह़त्तल इम्कान तरग़ीब दिला कर **"दा'वते इस्लामी के हर नेक व जाइज़ काम में ख़र्च करने"** की इजाज़त

www.dawateislami.net

के साथ वुसूल फ़रमाइये क्यूं कि बा'ज़ "मद्दाते मख़्सूसा" के अख़राजात मह़दूद या'नी कम होते हैं और बच जाने वाली रक़म अ़र्सए दराज़ तक रुकी रहती है, म-सलन मख़्सूस मस्जिद, मख़्सूस जामिआ़, मख़्सूस मद्रसा या मख़्सूस ता'मीरात वग़ैरा के लिये दिये गए अ़ति़य्यात, जब कि हर नेक व जाइज़ काम में ख़र्च की इजाज़त से लिये गए "अ़ति़य्याते नाफ़िला" दा'वते इस्लामी के मुख़्तलिफ़ शो'बाजात में से किसी भी शो'बे में शर-ई रहनुमाई के साथ ख़र्च किये जा सकते हैं।

❁ अगर कोई इस्लामी भाई मद्दाते मख़्सूसा के लिये ही अ़ति़य्यात देना चाहे तो भी वुसूल किये जा सकते हैं लेकिन "मद्दाते मख़्सूसा" की आमदन का ह़िसाब हर मद के ए'तिबार से अलग अलग तय्यार किया जाए।

❁ बा'ज़ इस्लामी भाई ज़कात किसी ख़ास काम या

www.dawateislami.net

ख़ास मक़्सद म-सलन जामिआ़, मद्रसा वग़ैरा के लिये भी देते हैं तो ऐसी सूरत में रसीद और रेकॉर्ड दोनों में मद और मक़्सद दुरुस्त और वाज़ेह़ त़ौर पर दर्ज फ़रमाइये।

❁ अगर कोई इस्लामी भाई नियाज़ के लिये रक़म देना चाहें तो उन को येह ज़ेह्न दीजिये कि "नियाज़ का मक़्सद ईसाले सवाब है लिहाज़ा आप जिन बुज़ुर्ग की नियाज़ दिलाना चाहते हैं उन के ईसाले सवाब के लिये लंगरे र-ज़विय्या की मद में दे दीजिये या फिर दा'वते इस्लामी के हर नेक व जाइज़ काम में ख़र्च करने की इजाज़त के साथ दे दीजिये, दा'वते इस्लामी के जिन जिन नेक कामों में इन अ़त़िय्यात को ख़र्च किया जाएगा उस का सवाब اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन बुज़ुर्ग को पहुंचता रहेगा।" लंगरे र-ज़विय्या की ता'रीफ़ व अल्फ़ाज़ अगले म-दनी फूल में मुल-ह़ज़ा फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

❁ लंगरे ग्यारहवीं, लंगरे बारहवीं लंगरे 15 रजब (कूंडों की नियाज़), शबे मे'राज, शबे बराअत और शबे क़द्र की मद में भी अ़त़िय्यात लिये जा सकते हैं, लेकिन बेहतर येह है कि लंगरे र-ज़विय्या की मद में अ़त़िय्यात वुसूल किये जाएं और अ़त़िय्यात देने वाले से इन अल्फ़ाज़ के साथ अ़त़िय्यात लिये जाएं **"आप अपनी येह रक़म र-मज़ानुल मुबारक की स-ह़री व इफ़्त़ारी, बड़ी रातों और दीगर मवाक़ेअ़ पर ग़रीब व अमीर, मो'तकिफ़ व ग़ैर मो'तकिफ़, रोज़ादार व बे रोज़ादार सभी को खाना खिलाने और इन में अश्याए ख़ुर्दो नोश तक़्सीम करने, दरियां, थाल और डेकोरेशन का सामान ख़रीदने या किराए पर लेने नीज़ इन के इलावा हर त़रह़ के नेक और जाइज़ कामों में ख़र्च करने की**

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी को मुकम्मल इजाज़त दे दीजिये ।''

❁ लंगरे र-ज़विय्या के लिये सिर्फ़ और सिर्फ़ स-दक़ाते नाफ़िला ही वुसूल कीजिये क्यूं कि लंगरे र-ज़विय्या में अमीर व ग़रीब सभी शरीक होते हैं लिहाज़ा इस के लिये ज़कात, फ़िदया बल्कि स-दक़ाते वाजिबा की बयान कर्दा अक़्साम में से कोई भी क़िस्म हरगिज़ हरगिज़ वुसूल न कीजिये और न ही किसी को इस की तरग़ीब दीजिये ।

❁ यूंही तक़्सीमे रसाइल और दारुल मदीना के लिये भी अ़त़िय्याते वाजिबा की तरग़ीब न दिलाइये बल्कि दा'वते इस्लामी के शो'बाजात की तफ़्सीलात बता कर उन का ज़ेह्न बनाइये और दा'वते इस्लामी के लिये वुसूल फ़रमाइये, अगर कोई मज़्कूरा मद्दात या'नी लंगरे र-ज़विय्या, तक़्सीमे रसाइल या दारुल मदीना के लिये ही अ़त़िय्यात देना चाहे तो इस के मख़्सूस कर्दा अल्फ़ाज़ के मुत़ाबिक़ इजाज़त के

www.dawateislami.net

साथ सिर्फ़ और सिर्फ़ अ़ति़य्याते नाफ़िला ही वुसूल कीजिये।

❁ इसी त़रह़ मसाजिद व मदारिस की ता'मीरात वग़ैरा के लिये भी ज़कात या किसी और स-द-क़ए वाजिबा की तरग़ीब न दिलाइये, अगर फिर भी कोई ज़कात मज़्कूरा मद्दात में ही देना चाहे तो रसीद पर मुकम्मल तफ़्सील दर्ज कर के रक़म वुसूल फ़रमाएं।

❁ अगर स-दक़ाते वाजिबा देने वाले ने फ़क़ीर मु-तअ़य्यन कर दिया (म-सलन सैलाब ज़-दगान या जामिआ़ के त़-लबा या फिर मद्रसे के त़-लबा वग़ैरा के लिये) तो रसीद पर मक़्सद के कॉलम में उसे लाज़िमी दर्ज कीजिये।

❁ मद्दाते मख़्सूसा, मद्दाते वाजिबा और मद्दाते नाफ़िला में से हर एक को अलग अलग ही रखिये और इन के रेकॉर्ड भी अलग अलग ही तरतीब दीजिये ताकि आपस में मद्दात मिल जाने का अन्देशा ही न रहे।

www.dawateislami.net

❁ अ़तिय्याते वाजिबा म-सलन क़सम के कफ़्फ़ारे, नमाज़ के फ़िदये, रोज़े के फ़िदये और मन्नत वगै़रा में से कोई मद वुसूल हो तो उस की मुकम्मल तफ़्सीलात ज़रूर मा'लूम कीजिये म-सलन कितनी क़समों के कफ़्फ़ारे हैं ? कितनी नमाज़ों या रोज़ों के फ़िदये हैं ? इसी त़रह़ मन्नत के मुकम्मल अल्फ़ाज़ वगै़रा भी मा'लूम कर के रसीद पर उस का भी इन्दिराज कीजिये, नीज़ रक़म देने वाले का फ़ोन नम्बर रसीद पर ज़रूर दर्ज फ़रमाइये ताकि अगर मज़ीद तफ़्सीलात मा'लूम करने की ज़रूरत हो तो राबित़ा किया जा सके।

झोली और बस्ते के लिये अल्फ़ाज़ व एह़तियातें

सुवाल - क्या झोली भी म-दनी अ़तिय्यात जम्अ़ करने का ज़रीआ़ है ? अगर है तो इस की एह़तियातें और

www.dawateislami.net

मोह़तात़ अल्फ़ाज़ बयान फ़रमा दीजिये ।

जवाब दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त, बड़ी रातों के इज्तिमाआ़त, जुमुआ़ व ईदैन, ईदगाहों, क़ब्रिस्तानों, मसाजिद, मेन बस स्टोप, पेट्रोल पम्प, रेल्वे स्टेशन, सब्ज़ी मन्डियों, लारी अड्डों, कचह्रियों, डाक ख़ानों, हस्पतालों, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के मज़ारों, बाज़ारों, मार्केटों और शॉपिंग सेन्टर्ज़ वग़ैरा में जहां भीड़ की वज्ह से लोग जल्द से जल्द म-दनी अ़ति़य्यात दे कर निकलना चाहते हैं, इन मक़ामात पर बिल ख़ुसूस और निगराने काबीना या डिवीज़न मुशा-वरत निगरान या मालियात ज़िम्मादार की मुशा-वरत से तै़ शुदा मह़फ़ूज़ मक़ामात पर बिल उ़मूम म-दनी अ़ति़य्यात की झोली व बस्ते का लाज़िमी एहतिमाम कीजिये।

❀ झोली व बस्ते के ज़रीए़ म-दनी अ़ति़य्यात वुसूल करने

www.dawateislami.net

वाले इस्लामी भाइयों की पहले अच्छी त़रह़ तरबियत की जाए और उस के बा'द ही येह अहम काम उन के सिपुर्द किया जाए वरना थोड़ी सी बे एह़तियात़ी शदीद नुक़्सान का सबब बन सकती है, अ़त़िय्यात की वुसूली का ए'लान होते ही मह़ब्बत का इज़्हार करते हुए हर किसी का झोली ले कर खड़े हो जाना दुरुस्त नहीं, झोलियां सिर्फ़ वोही इस्लामी भाई ले कर खड़े हों जिन की बा क़ाइ़दा तरबियत की गई हो और ख़ास त़ौर पर येह काम उन्हें सोंपा गया हो। ❁ म-दनी मर्कज़ की त़रफ़ से झोलियों के लिये जिस रंग की तख़्सीस की गई है सिर्फ़ उसी रंग की झोलियों की तरकीब बनाइये, लिहाज़ा ज़िम्मादारान को चाहिये कि उस मख़्सूस रंग की झोलियों के कपड़े पहले से तय्यार रखें और तरबियत याफ़्ता इस्लामी भाइयों को पेशगी दे दें ताकि सिर्फ़ वोही झोलियां म-दनी अ़त़िय्यात के लिये

www.dawateislami.net

इस्ति'माल की जाएं नीज़ उसी मख़्सूस रंग के कपड़ों का ए'लान किया जाए, म-दनी माह़ोल में कसरत से पाए जाने वाले रंग म-सलन सफ़ेद (White), सब्ज़ (Green), कथ्थई (Brown) रंग के कपड़ों में म-दनी अ़त़िय्यात के लिये झोली लगाने से इज्तिनाब करें।

❁ बेहतरीन त़रीक़ए कार येह है कि झोली सिर्फ़ स-दक़ाते नाफ़िला के लिये लगाई जाए और स-दक़ाते वाजिबा (म-सलन ज़कात, फ़ित्रा, उ़श्र वग़ैरा) और मद्दाते मख़्सूसा (म-सलन मस्जिद, मद्रसा, जामिआ़ वग़ैरा) के लिये झोली के बजाए अलग से बस्ता लगाइये और बस्ते पर तफ़्सीलात के साथ इन मद्दात को वुसूल फ़रमाइये, म-दनी अ़त़िय्यात के बस्ते पर बेनर भी आवेज़ां हो और रसीद बुक भी मौजूद हो और इस सूरत में दर्जे ज़ैल मोह़तात़ अल्फ़ाज़ के मुत़ाबिक़ ए'लानात कीजिये :

www.dawateislami.net

स-दक़ाते नाफ़िला की झोली के मोह़तात़ अल्फ़ाज़

"दा'वते इस्लामी के हर नेक व जाइज़ काम के लिये अपने नफ़्ली स-दक़ात इस झोली में डालिये और अपनी ज़कात, फ़ित्रा, और दीगर म-दनी अ़त़िय्यात बस्ते पर जम्अ़ करवा कर रसीद ज़रूर ह़ासिल कीजिये।"

म-दनी अ़त़िय्यात के बस्ते पर सदा लगाने के मोह़तात़ अल्फ़ाज़

"अपनी ज़कात, फ़ित्रा और दीगर अ़त़िय्याते वाजिबा दा'वते इस्लामी को दीजिये और रसीद ज़रूर ह़ासिल कीजिये।"

नोट झोली व बस्ते के दरमियान इतना फ़ासिला हो कि दोनों की सदाएं मिक्स न हों ताकि सुनने वाले को

www.dawateislami.net

ग़लत़ फ़हमी न हो।

रसीद बुक के ह़वाले से अहम हिदायात और एह़तियातें

सुवाल म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करवाने की तरग़ीब कब से शुरूअ़ की जाए ?

जवाब चूंकि अक्सर मुसल्मान र-जबुल मुरज्जब, शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म और र-मज़ानुल मुबारक में अपने म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करवाते हैं, लिहाज़ा यकुम र-जबुल मुरज्जब से ही म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करवाने की तरग़ीब और वुसूली की तरकीब शुरूअ़ फ़रमा दीजिये।

❁ म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करने की रसीदें जिन इस्लामी भाइयों को जारी की जाएं उन की मुकम्मल तफ़्सीलात

www.dawateislami.net

(नाम, फ़ोन नम्बर, एड्रेस, तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी, काबीना और काबीनात वग़ैरा) नीज़ रसीद बुक नम्बर और रसीद बुक का सीरियल भी मालियात मक्तब की त़रफ़ से दिये गए **रसीद बुक इजरा रजिस्टर/फ़ॉर्म** पर ज़रूर तह़रीर फ़रमाइये।

❁ दा'वते इस्लामी के लिये म-दनी अ़त़िय्यात की वुसूली करते वक़्त रसीद में मौजूद तमाम तफ़्सीलात (म-सलन नाम, फ़ोन नम्बर, एड्रेस, ई मेइल एड्रेस वग़ैरा) में से जिस क़दर मुम्किन हो मा'लूम कर के दर्ज कीजिये इसी त़रह़ रसीद पर तह़रीर मद्दात (ज़कात, फ़ित्रा, उ़श्र वग़ैरा) के आगे इन ही मद्दात की रक़म दर्ज फ़रमाइये। अ़त़िय्यात रसीद पुर करने का मुकम्मल त़रीक़ा जानने के लिये इसी रिसाले के सफ़ह़ा 82 पर पुर की हुई रसीद का नमूना

www.dawateislami.net

मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये ।

याद रहे ! ज़रा सी ग़फ़्लत या जल्द बाज़ी की वज्ह से मद्दात को वाज़ेह़ न करना किसी की ज़कात या फ़ित्रा ज़ाएअ़ होने का सबब बन सकता है, लिहाज़ा म-दनी अ़त़िय्यात की वुसूली के वक़्त म-दनी अ़त़िय्यात की मद्दात का मुकम्मल इन्दिराज रसीद पर करने के साथ साथ अपने पास मौजूद रजिस्टर या कॉपी वग़ैरा में लाज़िमी कर लीजिये ताकि किसी भी सूरत में मद्दात की तफ़्सीलात ज़ाएअ़ होने का अन्देशा न रहे ।

❁ म-दनी अ़त़िय्यात देने वाले का फ़ोन नम्बर रसीद पर दस्त-ख़त़ के साथ ज़रूर दर्ज फ़रमाइये ताकि मजलिसे मालियात या इफ़्ता मक्तब को म-दनी अ़त़िय्यात से मु-तअ़ल्लिक़ किसी भी क़िस्म की तफ़्सीलात मा'लूम करनी हों तो राबित़ा किया जा सके, इसी त़रह़ अगर कोई

www.dawateislami.net

इस्लामी भाई किसी और की त़रफ़ से म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करवाए तो म-दनी अ़त़िय्यात भेजने वाले और म-दनी अ़त़िय्यात लाने वाले दोनों की तफ़्सीलात रसीद पर दर्ज कीजिये।

❁ दा'वते इस्लामी के लिये म-दनी अ़त़िय्यात देने वाले हर इस्लामी भाई को मजलिसे मालियात की त़रफ़ से जारी कर्दा म-दनी अ़त़िय्यात की रसीद ज़रूर दीजिये, अगर कोई इस्लामी भाई येह कह कर रसीद लेने से इन्कार करे कि "**मुझे दा'वते इस्लामी पर भरोसा है**" तब भी ज़ेह्न बना कर रसीद पेश करने की कोशिश फ़रमाइये क्यूं कि इस त़रह़ दा'वते इस्लामी का पैग़ाम ब ज़रीअ़ए रसीद घर के कई अफ़्राद तक पहुंच सकता है।

❁ अ़लाक़ा/शह्र/डिवीज़न/काबीना किसी भी सत़्ह़ का ज़िम्मादार हो उसे चाहिये कि जारी की गई रसीद बुक्स

www.dawateislami.net

(Books) और उन के मुत़ाबिक़ जम्अ़ शुदा म-दनी अ़त़िय्यात मद्दात की **वज़ाह़त के साथ** मुकम्मल रेकॉर्ड और बच जाने वाली रसीदें **शव्वालुल मुकर्रम** के इब्तिदाई 5 दिनों के अन्दर अन्दर अपने मु-तअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादार को जम्अ़ करवा कर **''म-दनी अ़त़िय्यात रसीद बराए ज़िम्मादारान''** लाज़िमी ह़ासिल करे ।

नक़्दी (CASH) के मु-तअ़ल्लिक़ अहम हिदायात और एह़तियातें

सुवाल नक़्दी (CASH) और इन्आ़मी बॉन्ड्ज़ की सूरत में मिलने वाले म-दनी अ़त़िय्यात वुसूल करने से मु-तअ़ल्लिक़ एह़तियातें बयान फ़रमा दीजिये ।

जवाब केश की सूरत में वुसूल किये जाने वाले म-दनी अ़त़िय्यात हाथों हाथ चेक फ़रमा लीजिये, ऐसे

www.dawateislami.net

नोट बत़ौरे अ़त़िय्यात हरगिज़ वुसूल न कीजिये जो जा'ली हों या बन्द हो चुके हों या उन की ह़ालत ऐसी हो कि बेंक भी वुसूल न करता हो अलबत्ता ऐसी सूरते ह़ाल में बह़सो मुबा-ह़सा और सख़्त कलामी से इज्तिनाब करते हुए ह़िक्मते अ़-मली और हुस्ने अख़्लाक़ से काम लीजिये।

❁ गवर्नमेन्ट की त़रफ़ से जारी कर्दा इन्आ़मी बॉन्ड्ज़ भी अ़त़िय्याते नाफ़िला या वाजिबा के त़ौर पर लिये जा सकते हैं, इन्आ़मी बॉन्ड्ज़ का हुक्म भी केश की त़रह़ का है या'नी जिस त़रह़ केश की ह़िफ़ाज़त का इन्तिज़ाम किया जाता है बिल्कुल इसी त़रह़ इन की भी ह़िफ़ाज़त का इन्तिज़ाम करना चाहिये और बॉन्ड्ज़ वुसूल करने की सूरत में रसीद पर दीगर तफ़्सीलात का इन्दिराज करते वक़्त बॉन्ड का नम्बर और उस की मालियत ज़रूर तह़रीर

www.dawateislami.net

कीजिये और मालियात मक्तब में वोही बॉन्ड्ज़ जम्अ़ करवाइये, बॉन्ड्ज़ को तब्दील करने या अज़ ख़ुद केश करवाने की हरगिज़ इजाज़त नहीं।

सुवाल म-दनी अ़त़िय्यात में अगर ग़ैर मुल्की करन्सी, सोना, चांदी या कोई और क़ीमती धात वग़ैरा मौसूल हो तो क्या उसे फ़रोख़्त कर के रक़म मजलिसे मालियात को जम्अ़ करवा सकते हैं ?

जवाब अ़त़िय्याते वाजिबा या नाफ़िला में सोना, चांदी या ग़ैर मुल्की करन्सी वग़ैरा में से जो चीज़ जिस सूरत में मौसूल हो उसी सूरत में मु-तअ़ल्लिक़ा मालियात मक्तब में जम्अ़ करवाइये।

❁ इस बात का ख़याल रखिये कि अ़त़िय्याते वाजिबा और नाफ़िला इस त़रह़ मिक्स न होने पाएं कि इम्तियाज़

www.dawateislami.net

ही न रहे कि कौन से वाजिबा थे और कौन से नाफ़िला, क्यूं कि इस मुआ़-मले में ज़रा सी ग़फ़्लत व बे एह़तियाती से तावान लाज़िम हो सकता है।

❁ अ़तिय्यात के महीने (या'नी रजब, शा'बान, र-मज़ान) हों या आ़म दिन, केश की सूरत में मौसूल होने वाले म-दनी अ़तिय्यात ज़रूरतन एक या दो दिन से ज़ियादा अपने पास घर, मद्रसे या जामिआ़ वग़ैरा में न रखें कि **म-दनी अ़तिय्यात जितनी ज़ियादा जल्दी म-दनी मर्कज़ को जम्अ़ करवाएंगे उतनी ही जल्दी आप और जिन के अ़तिय्यात हैं दोनों बरिय्युज़्ज़िम्मा हो सकेंगे, बिला वज्ह ताख़ीर करने की सूरत में आज़्माइश ही आज़्माइश है,** लिहाज़ा तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ म-दनी अ़तिय्यात अपने मु-तअ़ल्लिक़ा

www.dawateislami.net

ज़िम्मादार या मालियात मक्तब में मद्दात की वज़ाह़त और मुकम्मल तफ़्सील के साथ फ़ौरी त़ौर पर जम्अ़ करवा कर **''म-दनी अ़त़िय्यात रसीद बराए ज़िम्मादारान''** या **''रसीद बराए मक्तब''** ज़रूर ह़ासिल फ़रमाएं।

❁ अगर केश फ़ौरी त़ौर पर जम्अ़ करवाना मुम्किन न हो तो ह़िफ़ाज़त के साथ किसी मह़फ़ूज़ जगह पर रखिये और इस बारे में अपने मु-तअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादारान को भी मुत्त़लअ़ फ़रमा दीजिये और फिर जैसे ही मुम्किन हो फ़ौरी त़ौर पर मु-तअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादार या मालियात मक्तब में जम्अ़ करवा दीजिये। याद रहे! ऐसी सूरत में ह़िफ़ाज़त का भरपूर एहतिमाम होना चाहिये, जान बूझ कर सुस्ती करना आप के लिये आज़्माइश का सबब बन सकता है, नीज़ नुक़्सान की सूरत में तावान भी लाज़िम आ सकता है, बहर ह़ाल **मोह़तात़ सदा सुखी रहता है।**

www.dawateislami.net

❁ मजालिस व शो'बाजात के ज़िम्मादारान अपने मु-तअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादार को अ़तिय्यात जम्अ़ करवाते वक़्त अ़तिय्यात रसीद ज़रूर ह़ासिल फ़रमाएं और इस पर मुकम्मल तफ़्सीलात का इन्दिराज भी चेक फ़रमा लें।

❁ **"म-दनी अ़तिय्यात रसीद बराए ज़िम्मादारान"** पर अ़तिय्यात जम्अ़ करवाने वाले और जम्अ़ करने वाले दोनों ज़िम्मादारान की तफ़्सीलात (नाम, एड्रेस, फ़ोन नम्बर, ज़िम्मादारी वग़ैरा) और म-दनी अ़तिय्यात की मद्दात की मुकम्मल तफ़्सीलात ज़रूर लिखें, **"म-दनी अ़तिय्यात रसीद बराए ज़िम्मादारान"** का पुर किया हुवा नमूना इसी रिसाले के सफ़ह़ा 86 पर मुला-ह़ज़ा कीजिये।

❁ तमाम ज़िम्मादारान अपने मा तह़्त इस्लामी भाइयों से अ़तिय्यात वुसूल करते वक़्त **"म-दनी अ़तिय्यात रसीद बराए ज़िम्मादारान"** ही इस्ति'माल फ़रमाएं और इसी

www.dawateislami.net

पर वुसूली दें, अगर मद्दात ज़ियादा हों और रसीद पर कॉलम कम हों तो दूसरी रसीद पर इन्दिराज फ़रमाएं, रसीद की पिछली त़रफ़ या अत़राफ़ में मद्दात की तफ़्सीलात का इन्दिराज न फ़रमाएं।

❁ नमाज़े ईद के लिये जाते हुए या इस क़िस्म के दीगर मवाक़ेअ़ पर अक्सर लोग जल्दी में होते हैं और बा'ज़ अवक़ात फ़ित्रे से ज़ियादा रक़म येह कह कर दे जाते हैं कि इतनी रक़म फ़ित्रा है और बाक़ी अ़त़िय्याते नाफ़िला या हर नेक व जाइज़ काम के लिये है, ऐसे लोग जल्दी की वज्ह से उ़मूमन रसीद नहीं ले पाते ऐसी सूरत में बस्ते पर मौजूद इस्लामी भाइयों को चाहिये कि अ़त़िय्याते वाजिबा और नाफ़िला की रक़म फ़ौरी त़ौर पर नोट फ़रमा लें ब सूरते दीगर इन के आपस में मिक्स हो जाने और तावान की सूरत बनने का क़वी अन्देशा है।

www.dawateislami.net

म-दनी मश्वरा अपने पास हर वक़्त क़लम और म-दनी पेड या डायरी वग़ैरा रखिये और इन का बर वक़्त इस्ति'माल भी कीजिये ।

चेक और बेंक के ह़वाले से अहम हिदायात और एह़तियातें

सुवाल म-दनी अ़त़िय्यात में अगर कोई चेक दे तो वुसूल कर सकते हैं या नहीं ? अगर वुसूल कर सकते हैं तो इस का त़रीक़ा भी इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

जवाब म-दनी अ़त़िय्यात के चेक ख़्वाह स-दक़ाते वाजिबा (म-सलन ज़कात, फ़ित्रा, उ़श्र वग़ैरा) के लिये हों या नाफ़िला के लिये, वुसूल किये जा सकते हैं लेकिन चेक बनवाते और वुसूल करते वक़्त इस बात को ज़रूर मद्दे नज़र रखें कि "**क्रॉस चेक**" दा'वते इस्लामी

www.dawateislami.net

(dawateislami) के नाम पर बनवाएं और वोही चेक डिवीज़न मालियात ज़िम्मादार या मु-तअ़ल्लिक़ा मालियात मक्तब में जम्अ़ करवाएं, अपने या किसी और के ज़ाती एकाउन्ट में जम्अ़ करवा कर उस के बदले अपना या किसी और का चेक जम्अ़ करवाने की तन्ज़ीमी त़ौर पर हरगिज़ इजाज़त नहीं ।

❁ अगर कोई इस्लामी भाई एकाउन्ट की तफ़्सीलात त़लब करें तो उन्हें ज़कात फ़ित्रा, लंगरे र-ज़विय्या और नफ़्ली स-दक़ात के एकाउन्ट्स की अलग अलग तफ़्सील (जो कि इस रिसाले के सफ़ह़ा 89, 90 पर भी दी गई है) वज़ाह़त के साथ बताइये और साथ ही साथ उन का येह ज़ेह्न भी बनाइये कि आप जैसे ही कोई अ़तिय्यात मु-तअ़ल्लिक़ा एकाउन्ट बिल ख़ुसूस ज़कात व फ़ित्रा वाले एकाउन्ट में किसी भी

www.dawateislami.net

ज़रीए़ से ट्रान्सफ़र या डिपोज़िट फ़रमाएं तो ट्रान्सफ़र या डिपोज़िट की रसीद के साथ **donations@dawateislami.net** पर E Mail या वॉट्स एप (**whats App**) नम्बर **9374631225** पर मेसेज या **9374631225** पर SMS के ज़रीए़ ज़रूर मुत्त़लअ़ फ़रमाएं कि आप ने किस एकाउन्ट में ? किस तारीख़ को ? किस मद में ? कितनी रक़म जम्अ़ करवाई है ? ताकि आप की ज़कात, फ़ित्रा व दीगर वाजिबात बर वक़्त अदा किये जा सकें, अगर आप की त़रफ़ से इत्तिलाअ़ मिलने में ताख़ीर हुई तो मुम्किन है कि आप की ज़कात ताख़ीर से अदा हो और ज़कात की अदाएगी में ताख़ीर करना गुनाह है। याद रहे ! अगर बेंक मा'मूल के मुत़ाबिक़ खुले रहे तो आप के स-दक़ाते वाजिबा दा'वते इस्लामी के बेंक एकाउन्ट में क्लीयर हो जाने की

www.dawateislami.net

सूरत में तक़रीबन **15** से **20** दिन के अन्दर अन्दर अदा किये जा सकेंगे। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

❀ अ़तिय्याते वाजिबा या नाफ़िला अगर शह्‌र सत़्ह़ के मालियात के एकाउन्ट में जम्अ़ करवाएं तो उस की रसीद की कोंपी भी अपने पास ज़रूर मह़फ़ूज़ रखिये और मालियात में इन्दिराज करवाने और "**रसीद बराए मक्तब**" ह़ासिल करने के लिये बेंक की अस्ल रसीद **(Original Bank Slip)** अपने साथ लेते आइये।

❀ उ़मूमन हिन्द भर से दा'वते इस्लामी के एकाउन्ट में अ़तिय्यात जम्अ़ करवाने पर बेंक की त़रफ़ से कोई अख़राजात **(Charges)** नहीं मगर इस के बा वुजूद अगर आप के यहां किसी क़िस्म के अख़राजात **(Charges)** मांगे जाएं तो इस की अदाएगी म-दनी अ़तिय्यात से न कीजिये बल्कि ऐसी सूरत में पहले मु-तअ़ल्लिक़ा मालियात

www.dawateislami.net

मक्तब से राबित़ा फ़रमाइये ।

चन्द मज़ीद एह़तियातें

❁ बसा अवक़ात म-दनी मर्कज़ की त़रफ़ से किसी मख़्सूस मद के लिये म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करने का ए'लान किया जाता है और फिर उस के लिये म-दनी अ़त़िय्यात मुहिम शुरूअ़ हो जाती है तो ऐसी मद्दात में ज़ाती याद दाश्त की बुन्याद पर अपने अल्फ़ाज़ से म-दनी अ़त़िय्यात वुसूल करने की हरगिज़ तरकीब न बनाइये बल्कि ए'लान किये गए अल्फ़ाज़ के मुत़ाबिक़ ही म-दनी अ़त़िय्यात वुसूल फ़रमाइये ।

❁ अगर कोई सूद, जुवा या रिश्वत वग़ैरा की रक़म अ़त़िय्यात में दे तो हरगिज़ वुसूल न कीजिये बल्कि उन से अ़र्ज़ कर दीजिये कि "**दा'वते इस्लामी के म-दनी**

www.dawateislami.net

अ़तिय्यात में इस क़िस्म की रक़म वुसूल नहीं की जाती'' अलबत्ता अगर ना दानिस्ता तौ़र पर आप इस क़िस्म की रक़म वुसूल कर चुके हैं तो दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से इस के बारे में शर-ई रहनुमाई ह़ासिल कीजिये और मिलने वाली हिदायात के मुत़ाबिक़ अ़मल कीजिये और अगर दारुल इफ़्ता से वोह रक़म स-दक़ा करने का कहा जाए तो आप अज़ ख़ुद किसी फ़क़ीरे शर-ई को सवाब की निय्यत किये बिग़ैर अदा कर दीजिये, बहर सूरत तौबा भी कीजिये और आयिन्दा न लेने का अ़ह्द भी कीजिये।

❁ अ़तिय्यात गुम हो जाने, कम हो जाने, ज़ियादा हो जाने या चोरी वग़ैरा हो जाने की सूरत में फ़ौरन तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ मु-तअ़ल्लिक़ा ज़िम्मादारान के ज़रीए मजलिसे मालियात को तह़रीरी तौ़र पर तफ़्सीलात से आगाह

www.dawateislami.net

फ़रमाइये, ऐसी सूरत में मजलिसे मालियात, इफ़्ता मक्तब से शर-ई रहनुमाई ह़ासिल कर के आप को मस्अले की रहनुमाई से मु-तअ़ल्लिक़ आगाह कर देगी, ज़रूरत पड़ने पर आप को इफ़्ता मक्तब में बुलाया भी जा सकता है, बहर ह़ाल मिलने वाली रहनुमाई के मुत़ाबिक़ ही अ़मल किया जाए, कहीं ऐसा न हो कि यहां (दुन्या) की ज़रा सी शर्म बरोज़े क़ियामत बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में शरमिन्दगी का बाइ़स बन जाए। اَلاَمَان وَالحَفِیظ

चन्दे से मु-तअ़ल्लिक़ चन्द शर-ई मसाइल

सुवाल क्या ह़ज या उ़म्रे के दम या ब-दने की रक़म अ़त़िय्याते दा'वते इस्लामी में वुसूल की जा सकती है ?

जवाब ह़ज या उ़म्रे के दम या ब-दने की रक़म म-दनी अ़त़िय्यात में हरगिज़ वुसूल न कीजिये क्यूं कि

www.dawateislami.net

ह़ज या उ़म्रे का दम या ब-दना क़ुरबानी की सूरत में हुदूदे ह़रम शरीफ़ में ही देना ज़रूरी होता है।

सुवाल - क्या ग़ैर मुस्लिम से चन्दा लिया जा सकता है ?

जवाब - ग़ैर मुस्लिम या बद मज़्हब से चन्दा लेने की हरगिज़ इजाज़त नहीं। मज़ीद तफ़्सील "चन्दे के बारे में सुवाल जवाब" के सफ़्हा नम्बर 19 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

सुवाल - क्या ना बालिग़ की ज़ाती रक़म म-दनी अ़त़िय्यात में वुसूल की जा सकती है ?

जवाब - ना बालिग़ की ज़ाती रक़म म-दनी अ़त़िय्यात में हरगिज़ वुसूल न फ़रमाइये, हां अगर ना बालिग़ के ज़रीए उस के वालिदैन या सर-परस्त अपने ज़ाती अ़त़िय्यात

www.dawateislami.net

भेजें तो वुसूल किये जा सकते हैं।

सुवाल उ़श्र की मद में अगर कोई नक़्दी दे तो क्या वुसूल की जा सकती है ?

जवाब अगर कोई शख़्स अपनी फ़स्ल का उ़श्र वग़ैरा बेच कर उस की नक़्दी दे तो वुसूल की जा सकती है अलबत्ता उ़श्र में वुसूल शुदा गन्दुम वग़ैरा को ह़ीले से पहले खुद बेचने की हरगिज़ इजाज़त नहीं।

सुवाल क्या म-दनी अ़त़िय्यात कोई इस निय्यत से अज़ खुद ख़र्च कर सकता है कि मैं ने जम्अ़ किये हैं, कुछ दिनों बा'द मजलिसे मालियात को जम्अ़ करवा दूंगा ?

जवाब दा'वते इस्लामी के लिये वुसूल किये गए म-दनी अ़त़िय्यात अपने या किसी और के ज़ाती मुआ़-मलात पर ख़र्च कर लेने की तन्ज़ीमी व शर-ई त़ौर

www.dawateislami.net

पर हरगिज़ इजाज़त नहीं, ऐसा करने पर तौबा और तावान दोनों लाज़िम आ सकते हैं।

सुवाल अ़त़िय्याते दा'वते इस्लामी में "**मन्नत**" की रक़म वुसूल करने का त़रीक़ा इर्शाद फ़रमा दीजिये ?

जवाब मन्नत के ह़वाले से म-दनी अ़त़िय्यात मौसूल हों तो किसी परचे पर मुकम्मल तफ़्सीलात लिख/लिखवा कर रसीद के साथ ज़रूर मुन्सलिक फ़रमाएं कि मन्नत क्या मानी थी और उस के अल्फ़ाज़ क्या थे ? म-सलन मैं इम्तिह़ान में काम्याब हो गया तो **500** रुपै दा'वते इस्लामी को दूंगा या फ़ैज़ाने मदीना में दूंगा, अगर मेरा फ़ुलां काम हो गया तो मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में **1000** रुपै दूंगा वग़ैरा ताकि शर-ई रहनुमाई के मुत़ाबिक़ ही उन अ़त़िय्यात का इस्ति'माल किया जा सके क्यूं कि बा'ज़ मन्नतें वाजिब होती हैं और बा'ज़ नफ़्ल लिहाज़ा

www.dawateislami.net

तफ़्सील मा'लूम न होने की सूरत में मसाइल का सामना हो सकता है।

सुवाल मर्ह़ूमीन की नमाज़ों और रोज़ों के फ़िदये वुसूल करने का त़रीक़ा इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब अगर कोई मर्ह़ूमीन की त़रफ़ से नमाज़ों या रोज़ों के फ़िदये देना चाहे तो उसे "**मर्ह़ूमीन की नमाज़ों और रोज़ों के फ़िदये वाला मस्अला**" जो कि दर्जे ज़ैल है, पढ़ाइये या पढ़ कर सुनाइये, अगर इस के मुत़ाबिक़ तरकीब बनती हो तो वुसूल फ़रमा कर रसीद पर ज़रूर तह़रीर फ़रमाइये।

मर्ह़ूमीन की नमाज़ों और रोज़ों के फ़िदये का मस्अला

❀ मय्यित की उ़म्र मा'लूम कर के उस में से नव साल

www.dawateislami.net

औ़रत के लिये और बारह साल मर्द के लिये ना बालिग़ी के निकाल दीजिये। बाक़ी जितने साल बचे उन में ह़िसाब लगाइये कि कितनी मुद्दत तक वोह (मर्हूमा या मर्हूम) बे नमाज़ी रहा या कितनी नमाज़ें उस के ज़िम्मे क़ज़ा की बाक़ी हैं। ज़ियादा से ज़ियादा अन्दाज़ा लगा लीजिये। बल्कि चाहें तो ना बालिग़ी की उ़म्र के बा'द से बक़िय्या तमाम उ़म्र का ह़िसाब लगा लीजिये। अब फ़ी नमाज़ एक स-द-क़ए फ़ित्र ख़ैरात कीजिये। एक स-द-क़ए फ़ित्र की मिक़्दार दो किलो में तक़रीबन **80** ग्राम कम गेहूं या उस का आटा या उस की रक़म है और एक दिन की छ[6] नमाज़ें हैं पांच फ़र्ज़ और एक वित्र वाजिब लिहाज़ा दो किलो में **80** ग्राम कम गेहूं की रक़म म-सलन **100** रुपै हो तो एक दिन की नमाज़ों के **600** रुपै, **30** दिन के अठ्ठारह हज़ार **(18,000)** रुपै और बारह माह के दो लाख,

www.dawateislami.net

सोलह हज़ार **(2,16,000)** रुपै हुए। अब अगर किसी मय्यित पर **50** साल की नमाज़ें बाक़ी हैं तो उन का फ़िदया अदा करने के लिये एक करोड़, आठ लाख **(1,08,00,000)** रुपै ख़ैरात करने होंगे।

❁ रोज़ों का ह़िसाब भी बिल्कुल इसी त़रह़ लगाइये कि कितनी मुद्दत तक वोह (मर्हूमा या मर्हूम) रोज़े न रख सका या कितने रोज़े उस के ज़िम्मे क़ज़ा के बाक़ी हैं। ज़ियादा से ज़ियादा अन्दाज़ा लगा लीजिये। बल्कि चाहें तो ना बालिग़ी की उ़म्र के बा'द से बक़िय्या तमाम उ़म्र का ह़िसाब लगा लीजिये, अब फ़ी रोज़ा एक स-द-क़ए फ़ित्र ख़ैरात कीजिये, एक स-द-क़ए फ़ित्र की रक़म अगर **100** रुपै हो तो एक दिन के रोज़े के **100** रुपै और **30** दिन के **3000** रुपै हुए, अब अगर किसी मय्यित पर **50** साल के रोज़े बाक़ी हैं तो **50** साल के रोज़ों के फ़िदये अदा करने के

www.dawateislami.net

लिये एक लाख पचास हज़ार **(1,50,000)** रुपै ख़ैरात करने होंगे।

❁ नीज़ फ़ित्रे की रक़म का ह़िसाब भी गेहूं के मौजूदा भाव से लगाना होगा। अगर वु-रसा अपने मर्ह़ूमीन के लिये येह अ़मल करें तो येह मय्यित की ज़बर दस्त इमदाद होगी, इस त़रह़ मरने वाला भी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़र्ज़ के बोझ से आज़ाद होगा और वु-रसा भी अज्रो सवाब के मुस्तह़िक़ होंगे। बा'ज़ ह़ज़रात मस्जिद वग़ैरा में एक क़ुरआने करीम का नुस्ख़ा दे कर अपने मन को मना लेते हैं कि हम ने मर्ह़ूम की तमाम नमाज़ों या रोज़ों का फ़िदया अदा कर दिया तो येह महज़ उन की ग़लत़ फ़हमी है। नमाज़ के फ़िदये के बारे में तफ़्सीली अह़कामात सीखने के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सए चहारुम से बाब **''नमाज़ का बयान''** का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

❁ अगर कोई ज़िन्दा की त़रफ़ से रोज़ों का फ़िदया देना चाहे तो उसे "**ज़िन्दा शैख़े फ़ानी के रोज़ों के फ़िदयों वाला मस्अला**" जो कि दर्जे ज़ैल है, पढ़ाएं या पढ़ कर सुनाएं, अगर इस के मुत़ाबिक़ तरकीब बनती हो तो वुसूल फ़रमाएं।

ज़िन्दा शैख़े फ़ानी के रोज़ों के फ़िदये का मस्अला

❁ हर शख़्स को रोज़े का फ़िदया देने की इजाज़त नहीं बल्कि येह हुक्म ऐसे शख़्स के लिये है जो बुढ़ापे के सबब इतना कमज़ोर हो गया हो कि अब रोज़े रखने की क़ुदरत पाने की उम्मीद ही न रही हो (न गर्मी में, न सर्दी में, न लगातार, न मु-तफ़र्रिक़ या'नी अ़ला-ह़दा अ़ला-ह़दा त़ौर पर) तो ऐसे शख़्स को रोज़ा न रखने की इजाज़त है, ऐसा

www.dawateislami.net

शख़्स फ़ी रोज़ा एक फ़िदया या'नी एक स-द-क़ए फ़ित्र ख़ैरात कर सकता है लेकिन अगर फ़िदया देने के बा'द वोह शख़्स रोज़ा रखने पर क़ादिर हो गया तो जो रोज़े क़ज़ा हुए थे और उन के फ़िदये दे चुका था उन रोज़ों की क़ज़ा लाज़िम होगी और ऐसी सूरत में जो फ़िदये दे चुका था वोह नफ़्ल हो जाएंगे।

❁ अगर कोई शख़्स बुढ़ापे के इलावा किसी बीमारी के सबब या किसी और सह़ीह़ वज्ह से रोज़े नहीं रख पाता तो फ़िदया देने की इजाज़त नहीं बल्कि तन्दुरुस्त होने या उस सह़ीह़ वज्ह के ख़त्म होने का इन्तिज़ार करे और तन्दुरुस्त हो जाने पर उन रोज़ों की क़ज़ा करे और अगर बीमारी से सिह़्ह़त याब होने की उम्मीद ही नहीं बल्कि यक़ीन हो चला है कि अब मौत ही आ जाएगी तो ऐसी सूरत में उन रोज़ों के फ़िदये की अदाएगी के लिये वसिय्यत करे।

www.dawateislami.net

❁ कफ़्फ़ारा क़सम का हो या रोज़े का इसी त़रह़ फ़िदया नमाज़ का हो या रोज़े का बल्कि आ़म स-द-क़ए फ़ित्ऱ में भी उस जगह का ए'तिबार किया जाएगा जहां वोह रहता है या'नी अगर कोई शख़्स मदीने शरीफ़ में रहता है और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा हिन्द में अदा करना चाहता है तो (ख़्वाह वोह स-द-क़ए फ़ित्ऱ की अदाएगी बैरूने मुल्क करन्सी में करे या बैरूने मुल्क करन्सी के ए'तिबार से इन्डियन करन्सी में) मदीने शरीफ़ के स-द-क़ए फ़ित्ऱ की रक़म का ए'तिबार किया जाएगा। रोज़े के फ़िदये के बारे में तफ़्सीली अह़कामात सीखने के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सए पन्जुम से बाब "**रोज़े का बयान**" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये।

नोट : फ़िलह़ाल लौट फेर करने की सहूलत मुयस्सर नहीं लिहाज़ा आप ख़ुद ही लौट फेर कर के दीजिये, हम आप

www.dawateislami.net

की रक़म लौट फेर के बिग़ैर शर-ई फ़क़ीर को अदा कर देंगे।

❁ अगर कोई इस्लामी भाई मज़ीद तफ़्सीलात जानना चाहे तो उसे राबिते़ के लिये दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के नम्बर्ज़ दे दीजिये, दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत से अन्दरूने मुल्क व बैरूने मुल्क राबिते़ के लिये नम्बर्ज़ इसी रिसाले के सफ़ह़ा नम्बर 91 ता 93 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं।

सुवाल अगर कोई क़सम के कफ़्फ़ारे की रक़म दा'वते इस्लामी को देना चाहे तो किस ह़िसाब से वुसूल की जाए ?

जवाब क़सम के कफ़्फ़ारे की मद में अ़ति़य्यात मौसूल हों तो वुसूल करते वक़्त इस बात का ख़ास ख़याल रखिये कि एक क़सम के कफ़्फ़ारे की मद में **10** स-द-क़ए

www.dawateislami.net

फ़ित्ऱ की रक़म वुसूल की जाएगी या'नी अगर स-द-क़ए फ़ित्ऱ **100** रुपै हो तो एक क़सम के कफ़्फ़ारे में **1000** रुपै वुसूल किये जाएंगे।

याद रहे ! क़सम के कफ़्फ़ारे का फ़ॉर्म अब हर रसीद बुक में मौजूद है, ज़रूरतन उस की कॉपियां करवा कर रख लीजिये, आप की सहूलत के लिये इस रिसाले के सफ़ह़ा 83 पर पुर किया गया नमूना भी दिया गया है, इस फ़ॉर्म पर दी गई हिदायात के मुत़ाबिक़ ही क़सम के कफ़्फ़ारे वुसूल फ़रमाइये और क़सम के कफ़्फ़ारे का फ़ॉर्म रसीद के साथ मुन्सलिक फ़रमाइये।

सुवाल स-द-क़ए फ़ित्ऱ की मिक़्दार इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब एक स-द-क़ए फ़ित्ऱ की मिक़्दार **1920**

www.dawateislami.net

ग्राम (या'नी दो किलो में **80** ग्राम कम) गन्दुम या उस का आटा या उस की क़ीमत है, इस से कम वुसूल न फ़रमाएं क्यूं कि कम वुसूली की सूरत में अदाएगी नहीं हो सकेगी अलबत्ता अगर कोई ज़ियादा जम्अ़ करवाना चाहे म-सलन एक स-द-क़ए फ़ित्ऱ की मिक़्दार अगर **100** रुपै मु-तअ़य्यन की गई हो और देने वाला **112** या **126** के ह़िसाब से दे तो वुसूली की जा सकती है। लेकिन याद रहे ! ऐसी सूरत में स-द-क़ए फ़ित्ऱ (या कफ़्फ़ारा या फ़िदया) की मद में ज़ाइद मिलने वाली रक़म भी स-द-क़ए फ़ित्ऱ (या कफ़्फ़ारा या फ़िदया) ही शुमार होगी, इसे अपने त़ौर पर नफ़्ली स-दक़ा शुमार नहीं किया जा सकता जब तक कि स-द-क़ए फ़ित्ऱ देने वाला ज़ाइद रक़म के नफ़्ली स-दक़ा होने की वज़ाह़त न कर दे।

www.dawateislami.net

सुवाल क्या अ़त़िय्यात रसीद बुक की ह़िफ़ाज़त का इन्तिज़ाम करना ज़रूरी है ? बराए करम रहनुमाई और तरबियत फ़रमा दीजिये।

जवाब म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करने के लिये जिन इस्लामी भाइयों को रसीद बुक्स जारी की जाएं उन को दीनी कामों के लिये चन्दा करने के फ़ज़ाइल सुनाने के साथ साथ रसीदें वापस न करने की सूरत में पेश आने वाले मुम्किना मसाइल से भी आगाह फ़रमाएं, इस का बेहतर और आसान त़रीक़ा येह है कि उन इस्लामी भाइयों को "**शर-ई मस्अला**" के नाम से रसीद बुक वाला दर्जे ज़ैल फ़तवा पढ़ कर सुना दिया जाए।

शर-ई मस्अला

अ़त़िय्यात जम्अ़ करने के लिये बनाई जाने वाली

www.dawateislami.net

तमाम क़िस्म की रसीदें मजलिसे मालियात या जिस को भी दी जाएं उस के पास बत़ौरे अमानत होती हैं जिस की ह़िफ़ाज़त करना भी उस की ज़िम्मादारी है और जिन इस्लामी भाइयों को येह रसीदें दी जाएं उन पर लाज़िम है कि तमाम रसीदें मजलिसे मालियात को वापस कर दें। बिला इजाज़ते शर-ई वापस न करना या अपनी कोताही से रसीदें गुम कर देना ना जाइज़ व गुनाह है। याद रहे कि अगर ब त़रीक़े शर-ई येह साबित हुवा कि किसी की तअ़द्दी या ह़िफ़ाज़त में कोताही बरत्ने से रसीदें गुम हुई हैं तो इस सूरत में उस इस्लामी भाई को रसीदों का तावान भी अदा करना होगा। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत)

नोट रसीद बुक का मोह़तात़ इस्ति'माल न करने से रसीदें या रसीद बुक ज़ाएअ़ होने का क़वी अन्देशा है

www.dawateislami.net

लिहाज़ा अ़त़िय्यात जम्अ़ करने वाले इस्लामी भाइयों को किसी भी क़िस्म की मुम्किना ग़फ़्लत व बे एह़तियात़ी से बचाने के लिये उन की सहूलत व ख़ैर ख़्वाही के पेशे नज़र इफ़्ता मक्तब की मुशा-वरत से मज़्कूरा फ़तवा रसीद बुक के ऊपर भी प्रिन्ट करवा दिया गया है ताकि एह़तियात़ का दामन न छूटने पाए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अमीरे अहले सुन्नत की गुलामी और दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल पर इस्तिक़ामत के साथ हर म-दनी काम के लिये हर वक़्त तय्यार रहने की तौफ़ीक़ सईद अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

ह़लाल रोज़ी किस निय्यत से त़लब की जाए ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदुल मु-तवक्किलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो ह़लाल रोज़ी सुवाल से बचने, घर वालों की ख़बर गीरी करने और पड़ोसियों पर शफ़्क़त की निय्यत से त़लब करेगा वोह क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस का चेहरा चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ (चमक्ता) होगा और जो ह़लाल रोज़ी माल बढ़ाने, फ़ख़्रो तकब्बुर और दिखलावे की निय्यत से त़लब करेगा तो वोह बारगाहे इलाही में इस ह़ाल में ह़ाज़िर होगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से नाराज़ होगा।''

(مصنف ابن شیبة، کتاب البیوع، باب فی التجارة والرغبة فیها، ۵/۲۵۸، حدیث: ۷)

www.dawateislami.net

अ़तिय्यात की पुर (Fill) की हुई रसीद का नमूना

दा'वते इस्लामी - हिन्द®

तारीख़ 26-08-2015

वक़्फ़ रजी. नं. 042 - अह़मदआबाद.

रसीद नम्बर : 15001

म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर,
अह़मदआबाद - 380001, गुजरात, इन्डिया. फ़ोन : 09375493607

नाम मअ़ वल्दिय्यत : ग़ुलाम यासीन अ़त्तारी मह़मूद हुसैन

फ़ोन नम्बर : 079-1234567

पता : 37 / 2 राजस्थान सोसा., शाहे आ़लम दरवाज़े के पास, अह़मदआबाद

रक़म हिन्दसों में : 26000 रक़म लफ़्ज़ों में : छब्बीस हज़ार रुपै

चेक नम्बर : 4044076 बेंक : Axis Bank ब्रांच : रिलीफ़ रोड़ तारीख़ : 30-08-2015

नाम वुसूल कुनिन्दा : आसिफ़ अ़त्तारी ज़िम्मादारी/मजलिस : ह़ल्क़ा निगरान

दस्त-ख़त़ वुसूल कुनिन्दा : आसिफ़ अ़त्तारी चन्दा देने वाले के दस्त-ख़त़ : ग़ुलाम यासीन

मद	मक़्सद	रक़म
(स-दक़ाते वाजिबा की मुख़्तलिफ़ सूरतें म-सलन नज़्र, क़सम का कफ़्फ़ारा, फ़िद्या वग़ैरा की मुकम्मल तफ़्सील लिख कर रक़म जम्अ़ करवाएं)		
ज़कात	दा'वते इस्लामी	12000
फ़ित़्रा	दा'वते इस्लामी	9000
उ़श्र	दा'वते इस्लामी	3000
स-दक़ाते नाफ़िला	लंगरे र-ज़विय्या	1000
स-दक़ाते नाफ़िला	म-दनी चेनल	1000
मीज़ान		26000

Http://www.dawateislami.net/donation/donate.do e-mail : donations@dawateislami.net

आप का चन्दा (तमाम नफ़्ली स-दक़ात) दा'वते इस्लामी जहां मुनासिब समझेगी वहां नेक व जाइज़ काम में ख़र्च करेगी.

www.dawateislami.net

क़सम के कफ़्फ़ारे के फ़ॉर्म का पुर किया हुवा नमूना

क़सम खाने वाले का नाम : बक्र अ़त्तारी

फ़ोन नम्बर : 079 11122526 मोबाइल नम्बर : 09811122526

ई मेइल एड्रेस : abc@gmail.com घर/ऑफ़िस का पता : फ़्लेट नम्बर 2, ब्लॉक : L, सलाट वाड़ा, दिल्ही चकला, अह़मदआबाद, गुजरात

कितनी क़सम का कफ़्फ़ारा है ता'दाद : 1 कफ़्फ़ारे की रक़म : 1,000 क़सम जो खाई थी उस के मुकम्मल अल्फ़ाज़ तह़रीर फ़रमाएं :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम मैं ज़ैद से बात नहीं करूंगा लेकिन मैं ने ज़ैद से बात कर ली।

क़सम के कफ़्फ़ारे की रक़म वुसूल करने के म-दनी फूल

❀ क़सम के कफ़्फ़ारे में स-द-क़ए फ़ित्र की रक़म में उस जगह का ए'तिबार किया जाएगा जहां क़सम तोड़ने वाला

www.dawateislami.net

शख़्स मौजूद है या'नी अगर कोई शख़्स मदीने शरीफ़ में है और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा इन्डिया में अदा करना चाहता है तो मदीने शरीफ़ के स-द-क़ए फ़ित्ऱ की रक़म का ए'तिबार किया जाएगा ।

❁ एक क़सम के कफ़्फ़ारे की मद में **10** स-द-क़ए फ़ित्ऱ की रक़म वुसूल की जाए, एक स-द-क़ए फ़ित्ऱ की मिक़्दार **1920** ग्राम (दो किलो में **80** ग्राम कम) गन्दुम या उस का आटा या उस की क़ीमत है, इस मिक़्दार से कम वुसूल न फ़रमाएं कि कम वुसूली की सूरत में अदाएगी नहीं हो सकेगी, म-सलन एक स-द-क़ए फ़ित्ऱ की रक़म अगर **100** रुपै हो तो **10** स-द-क़ए फ़ित्ऱ की रक़म **1000** बनेगी ।

❁ अलबत्ता अगर कोई कफ़्फ़ारे की मद में स-द-क़ए

www.dawateislami.net

फ़ित्ऱ की रक़म से कुछ ज़ियादा जम्अ़ करवाना चाहे म-सलन एक स-द-क़ए फ़ित्ऱ की मिक़्दार अगर **100** रुपै मु-तअ़य्यन की गई हो और देने वाला **112** या **126** के ह़िसाब से दे तो वुसूली की जा सकती है।

❁ क़सम के कफ़्फ़ारे के लिये जो रक़म ली जा रही है "क़सम के कफ़्फ़ारे की अदाएगी" की मद में ही वुसूल फ़रमाएं, इस रक़म को हर नेक व जाइज़ काम की मद में हरगिज़ न लें।

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी

म-दनी अ़त़िय्यात रसीद बराए ज़िम्मादारान (नक़्दी/चेक)

रसीद नम्बर : 0007	(ज़ैली ह़ल्क़ा/ह़ल्क़ा/अ़लाक़ा/डिवीज़न/शह्र/काबीना/काबीनात)				बुक नम्बर : 25
तारीख़	30 एप्रिल 2016	अ़लाक़ा (तन्ज़ीमी सरकारी)	सरख़ेज़	काबीना	ज़ियाई काबीना
ज़ैली ह़ल्क़ा	कन्ज़ुल ईमान मस्जिद	डिवीज़न	गुलशने मुर्शिद	काबीनात	अ़त़ारी काबीनात
ह़ल्क़ा	फ़ैज़ाने मुह़म्मदी	शह्र	अह़मदआबाद	मुल्क	इन्डिया

मद्दाते वाजिबा	मक़्सद/ता'दाद	रक़म	मद्दाते नाफ़िला/मद्दाते मख़्सूसा	रक़म
ज़कात	दा'वते इस्लामी के लिये	3,000	मस्जिद	52,000
फ़ित्रा	दा'वते इस्लामी के लिये	7,000	मद्र-सतुल मदीना	12,000
उ़श्र	दा'वते इस्लामी के लिये	12,000	जामिअ़तुल मदीना	13,000
ह़ज व उ़म्रह के स-दक़ात	2 अ़द्द	200	फ़ैज़ाने मदीना	25,000
क़सम के कफ़्फ़ारे	3 अ़द्द	3,000	म-दनी चेनल	26,000
नमाज़ के फ़िदये	एक माह की नमाज़ों का	18,000	दारुल मदीना	11,000
रोज़े के फ़िदये	एक माह के रोज़ों का	3,000	म-दनी क़ाफ़िला	5,500
मन्नते वाजिबा की रक़म	अल्लाह की रह में स-दक़ा	6,000	हदिय्या	2,600
दीगर			ख़ैरात	1,200
दीगर			हर नेक व जाइज़ काम	26,000
दीगर			दीगर	
दीगर			दीगर	
दीगर			दीगर	
टोटल रक़म (हिंदसों में)	52,200		टोटल रक़म (हिंदसों में)	1,74,300
कुल रक़म हिंदसों में	226,500	कुल रक़म लफ़्ज़ों में	दो लाख छब्बीस हज़ार पांच सो रुपै नक़्द	

रसीद नम्बर्ज़ : बुक नम्बर 50 (रसीद नम्बर 01 ता 18) और बुक नम्बर 58 (रसीद नम्बर 80 ता 96)	टोटल रसीद की ता'दाद	35
चेक नम्बर्ज़ : SBI-12345 & AXIS-12345	टोटल चेक की ता'दाद	2

बक़िय्या अगले सफ़ह़े पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये 1/2

www.dawateislami.net

नोट	ज़र्ब	ता'दाद	रक़म	नोट	ज़र्ब	ता'दाद	रक़म
1000	X	20	20,000	1000	X	92	92,000
500	X	42	21,000	500	X	88	44,000
100	X	22	2,200	100	X	63	6,300
50	X	40	2,000	50	X	52	2,600
20	X	25	500	20	X	60	1,200
10	X	118	1,180	10	X	219	2,190
5	X	26	130	5	X	140	700
2	X	70	140	2	X	110	220
1	X	50	50	1	X	90	90
टोटल			47,000	टोटल			1,49,300

अ़ति़य्यात जम्अ़ करने वाले इस्लामी भाई की तफ़्सीलात		मा'रिफ़त		अ़ति़य्यात वुसूल करने वाले इस्लामी भाई की तफ़्सीलात	
नाम	अ़ब्दुल्लाह अ़त्तारी	नाम	अ़ब्दुर्रहमान अ़त्तारी	नाम	ज़ैद अ़त्तारी
ज़िम्मादारी	ह़ल्क़ा मुशा-वरत म-दनी इन्आ़मात	ज़िम्मादारी	ह़ल्क़ा निगरान	ज़िम्मादारी	अ़लाक़ा निगरान
मोबाइल नम्बर	01112252692	मोबाइल नम्बर	01112252695	मोबाइल नम्बर	01112252692
दस्त-ख़त	Abdullah Attari	दस्त-ख़त	Abdurrahman Attari	दस्त-ख़त	Zaid Attari

www.dawateislami.net

अ़त़िय्यात जम्अ़ करवाने के लिये एकाउन्ट्स की तफ़्सील

दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिये म-दनी अ़त़िय्यात जम्अ़ करवाने के लिये ज़कात, फ़ित्रा और स-दक़ाते नाफ़िला वग़ैरा के लिये अलग अलग एकाउन्ट्स की तफ़्सीलात दर्जे ज़ैल है, मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं, नीज़ जब भी दर्जे ज़ैल में से किसी एकाउन्ट बिल ख़ुसूस ज़कात व फ़ित्रा वाले एकाउन्ट में किसी भी ज़रीए से म-दनी अ़त़िय्यात ट्रान्सफ़र या डिपोज़िट फ़रमाएं तो ट्रान्सफ़र रसीद के साथ donations@dawateislami.net पर मुत्त़लअ़ फ़रमाएं, नीज़ ब ज़रीअ़ए SMS या Whatsapp इस नम्बर **9374631225** पर भी इत्त़िलाअ़ दी जा सकती है।

www.dawateislami.net

1 बराए ज़कात व फ़ित्रा

A/c Name : Dawate Islami Hind

A/c No : 910010026818286

Bank Name : Axis Bank

Branch : Relief Road (Ahmedabad)

IFSC Code : UTIB0000453

Pan No : AAATD8357K

2 बराए ज़कात व फ़ित्रा

A/c Name : Dawate Islami Hind Zakat

A/c No : 30914800756

Bank Name : State Bank of India

Branch : Byculla (Mumbai)

IFSC Code : SBIN0000343

Pan No : AABTD0414G (sixth digit is zero)

www.dawateislami.net

﴾1﴿ बराए अ़त़िय्यात व स-दक़ाते नाफ़िला

A/c Name : Dawate Islami Hind

A/c No : 910010032457716

Bank Name : Axis Bank

Branch : Relief Road (Ahmedabad)

IFSC Code : UTIB0000453

Pan No : AAATD8357K

﴾2﴿ बराए अ़त़िय्यात व स-दक़ाते नाफ़िला

A/c Name : Dawate Islami Hind

A/c No : 31255546072

Bank Name : State Bank of India

Branch : Sewa Sadan Chauk (Nagpur)

IFSC Code : SBIN0060279

Pan No : AABTD0414G (sixth digit is zero)

www.dawateislami.net

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत दा'वते इस्लामी के पते और फ़ोन नम्बर्ज़ 2016 सि.ई.

नं.	मक़ाम	अवक़ाते कार	ता'त़ील
1	**इफ़्ता मक्तब :** आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची) (सिर्फ़ ज़िम्मादारान तन्ज़ीमी उमूर में शर-ई मसाइल के ह़ल के लिये रुजूअ़ फ़रमाएं)	सुब्ह़ 10 ता शाम 04	जुमुअ़तुल मुबारक
2	**इफ़्ता मक्तब :** नज़्द मक-त-बतुल मदीना, गन्ज बख़्श मार्केट, दाता दरबार मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) (सिर्फ़ ज़िम्मादारान तन्ज़ीमी उमूर में शर-ई मसाइल के ह़ल के लिये रुजूअ़ फ़रमाएं)	सुब्ह़ 09 ता शाम 05	इतवार
3	**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत :** जामेअ़ मस्जिद कन्ज़ुल ईमान (बाबरी चोक) गुरू मन्दिर बाबुल मदीना (कराची)	सुब्ह़ 10 ता शाम 04	जुमुअ़तुल मुबारक
4	**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत :** जामेअ़ मस्जिद मा'सूम शाह बुख़ारी, नज़्द पोलीस चोकी खारादर बाबुल मदीना (कराची)	सुब्ह़ 11 ता शाम 05	जुमुअ़तुल मुबारक
5	**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत :** जामेअ़ मस्जिद रज़ाए मुस्त़फ़ा बिल मुक़ाबिल मोबाइल मार्केट कोरंगी नम्बर 4 बाबुल मदीना (कराची)	दोपहर 12 ता शाम 05	जुमुअ़तुल मुबारक

www.dawateislami.net

6	**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत :** जामेअ़ मस्जिद अक़्सा अक्बर रोड नज़्द रीगल चोक सदर बाबुल मदीना (कराची)	सुब्ह़ 11 ता शाम 04	जुमुअ़तुल मुबारक
7	**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत :** आफ़न्दी टाउन बिल मुक़ाबिल म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल इस्लाम (ह़ैदरआबाद सिन्ध)	सुब्ह़ 11 ता शाम 04	जुमुअ़तुल मुबारक
8	**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत :** नज़्द ज़ैनब मस्जिद मुह़म्मदिय्यह कॉलोनी सोसां रोड मदीना टाउन सरदारआबाद (फ़ैसलआबाद)	सुब्ह़ 10:30 ता शाम 04:30	जुमुअ़तुल मुबारक
9	**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत :** नज़्द मक-त-बतुल मदीना गन्ज बख़्श मार्केट मर्कज़ुल औलिया दाता दरबार मर्कज़ुल औलिया (लाहोर)	सुब्ह़ 09 ता शाम 05	इतवार
10	**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत :** लत़ीफ़ प्लाज़ा (ज्वेलरी मार्केट) फ़र्स्ट फ़्लोर फ़ीरोज़पूर रोड अछ्रा मर्कज़ुल औलिया (लाहोर)	सुब्ह़ 11 ता शाम 05	इतवार
11	**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत :** नज़्द जामेअ़ मस्जिद ग़ौसिया ह़ाजी अह़मद जान बेंक रोड सदर (रावलपिन्डी केन्ट)	सुब्ह़ 10 ता शाम 04	जुमुअ़तुल मुबारक
12	**दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत :** ज़ह़ूर प्लाज़ा नूरी गेट नज़्द बाटा शूज़ गुलज़ारे त़यबा (सरगोधा)	सुब्ह़ 10:30 ता शाम 04:30	जुमुअ़तुल मुबारक

www.dawateislami.net

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के फ़ोन नम्बर और मेइल एड्रेस

फ़ोन सर्विस के अवक़ाते कार	0300-0220113	0300-0220112	बिल खुसूस पाकिस्तान और दुन्या भर के लिये
10am ता 4 pm (वक़्फ़ा 1 ता 2, जुमुअ़तुल मुबारक ता'त़ील)	0300-0220115	0300-0220114	
पाकिस्तानी अवक़ात के मुत़ाबिक़ 2 pm ता 7 pm (इ़लावा नमाज़ के अवक़ात)		0044 121 318 2692	बिल खुसूस यूके और दुन्या भर के लिये
पाकिस्तानी अवक़ात के मुत़ाबिक़ 2 pm ता 7 pm (इ़लावा नमाज़ के अवक़ात)		0015 8590 200 92	बिल खुसूस अमरिका और दुन्या भर के लिये
पाकिस्तानी अवक़ात के मुत़ाबिक़ 2 pm ता 7 pm (इ़लावा नमाज़ के अवक़ात)		0027 31 813 5691	बिल खुसूस अफ़्रीका और दुन्या भर के लिये
वक़्फ़ा बराए नमाज़ व त़आ़म		1:00 ता 2:00	
Email: darulifta@dawateislami.net			

मेरा म-दनी मक़्सद : **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के ख़िदमते दीन के 102 शो'बाजात

﴾1﴿ म-दनी इन्आ़मात ﴾2﴿ म-दनी क़ाफ़िला ﴾3﴿ मजलिसे बैरूने मुल्क ﴾4﴿ म-दनी तरबियत गाहें ﴾5﴿ मजलिसे हफ़्तावार इज्तिमाअ़ ﴾6﴿ इज्तिमाई ए'तिकाफ़ (पूरा माहे र-मज़ान/आख़िरी अ़-शरा) ﴾7﴿ मजलिसे ह़ज व उ़म्रह ﴾8﴿ मजलिसे हफ़्तावार म-दनी मुज़ा-करा ﴾9﴿ जामिअ़तुल मदीना (लिल बनीन) ﴾10﴿ जामिअ़तुल मदीना (लिल बनात) ﴾11﴿ मद्र-सतुल मदीना (लिल बनीन) ﴾12﴿ मद्र-सतुल मदीना (लिल बनात) ﴾13﴿ मद्र-सतुल मदीना (जुज़ वक़्ती) ﴾14﴿ मद्र-सतुल मदीना लिल बनीन (रिहाइशी) ﴾15﴿ मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ान) ﴾16﴿ मद्र-सतुल

www.dawateislami.net

मदीना कोर्सिज़ ﴾17﴿ मद्र-सतुल मदीना ऑन लाइन ﴾18﴿ दारुल मदीना (लिल बनीन) ﴾19﴿ दारुल मदीना (लिल बनात) ﴾20﴿ दारुल मदीना (स्कूल) ﴾21﴿ दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत ﴾22﴿ अल मदीना लायब्रेरी ﴾23﴿ तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह ﴾24﴿ मजलिसे त़िब्बी इलाज ﴾25﴿ मजलिसे तौक़ीत ﴾26﴿ मजलिसे कारकर्दगी फ़ॉर्म व म-दनी फूल ﴾27﴿ मजलिसे कोर्सिज़ (म-दनी इन्आ़मात व म-दनी क़ाफ़िला कोर्स, कुफ़्ले मदीना कोर्स, म-दनी तरबियती कोर्स वग़ैरा) ﴾28﴿ अल मदीनतुल इल्मिय्या ﴾29﴿ मजलिसे तराजिम ﴾30﴿ मक-त-बतुल मदीना ﴾31﴿ म-दनी चेनल ﴾32﴿ मजलिसे आई टी ﴾33﴿ म-दनी चेनल रिले मजलिस ﴾34﴿ शो'बए ता'लीम ﴾35﴿ मजलिसे खुसूसी इस्लामी

www.dawateislami.net

भाई ﴾36﴿ मजलिसे इस्लाह़ बराए क़ैदियान ﴾37﴿ मजलिसे ताजिरान ﴾38﴿ मजलिसे वु–कला व जजिज़ ﴾39﴿ मजलिसे ज़राएअ़ आ–मदो रफ़्त (ट्रान्सपोर्टर्ज़) ﴾40﴿ मजलिसे डॉक्टर्ज़ ﴾41﴿ मजलिसे होमियो पेथिक डॉक्टर्ज़ ﴾42﴿ मजलिसे वेटर्नरी डॉक्टर्ज़ (मुआ़लिजे ह़ैवानात) ﴾43﴿ मजलिसे ह़कीम ﴾44﴿ मजलिसे इस्लाह़ बराए खिलाड़ियान ﴾45﴿ मजलिसे उ़श्र व अत़राफ़ गाउं ﴾46﴿ मजलिसे राबित़ा ﴾47﴿ मजलिसे राबित़ा बिल उ़–लमा वल मशाइख़ ﴾48﴿ मजलिसे मज़ाराते औलिया ﴾49﴿ मजलिसे नश्रो इशाअ़त ﴾50﴿ मजलिसे ताजिरान बराए गोश्त ﴾51﴿ मजलिसे खुद्दामुल मसाजिद ﴾52﴿ आइम्मए मसाजिद ﴾53﴿ मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या ﴾54﴿ मजलिसे सह़राए मदीना ﴾55﴿

www.dawateislami.net

मजलिसे तक़्सीमे रसाइल ﴾56﴿ मजलिसे ख़ैर ख़्वाही (ज़ल्ज़ला व सैलाब ज़दगान वग़ैरा) ﴾57﴿ मजलिसे इमामत कोर्स ﴾58﴿ लंगरे र-ज़विय्या ﴾59﴿ मजलिसे मालियात ﴾60﴿ मजलिसे असासा जात ﴾61﴿ मजलिसे इजारा ﴾62﴿ मजलिसे ह़िफ़ाज़ती उमूर ﴾63﴿ मजलिसे फ़ैज़ाने मदीना (म-दनी मराकिज़) ﴾64﴿ मजलिसे ता'मीरात ﴾65﴿ मजलिसे कारकर्दगी ﴾66﴿ मजलिसे म-दनी अ़ति़य्यात बक्स ﴾67﴿ मजलिसे म-दनी बहारें ﴾68﴿ मजलिसे फ़ैज़ाने मुर्शिद ﴾69﴿ मजलिसे तज्हीज़ो तक्फ़ीन ﴾70﴿ मजलिसे इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त ﴾71﴿ मजलिसे कोर्स बराए न्यू मुस्लिम ﴾72﴿ मजलिसे तफ़्तीशे क़िराअत व मसाइल ﴾73﴿ ऑन लाइन कोर्सिज़ (उ़लूमे इस्लामिया कोर्स, न्यू मुस्लिम कोर्स,

www.dawateislami.net

फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स) ﴾74﴿ जामिअ़तुल मदीना (ऑन लाइन) ﴾75﴿ मजलिसे चर्मे क़ुरबानी ﴾76﴿ मजलिसे तह़क़ीक़ाते शरइ़य्या ﴾77﴿ मजलिसे इस्लाह़ बराए फ़न्कार ﴾**इस्लामी बहनों की आ़लमी मजलिसे मुशा-वरत के तह़्त शो'बे**﴿ : ﴾78﴿ मजलिसे म-दनी काम बराए इस्लामी बहनें ﴾79﴿ मजलिसे फ़ैज़ाने मुर्शिद बराए इस्लामी बहनें ﴾80﴿ मजलिसे शो'बए ता'लीम बराए इस्लामी बहनें ﴾81﴿ मजलिसे ख़ुसूसी इस्लामी बहनें ﴾82﴿ मजलिसे म-दनी इन्आ़मात बराए इस्लामी बहनें ﴾83﴿ मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ात) ﴾84﴿ मजलिसे कोर्सिज़ बराए इस्लामी बहनें ﴾85﴿ मजलिसे ह़िफ़ाज़ती उमूर बराए इस्लामी बहनें ﴾86﴿ मजलिसे राबित़ा बराए इस्लामी बहनें ﴾87﴿ म-

www.dawateislami.net

दनी तरबियत गाहें बराए इस्लामी बहनें ﴾88﴿ मजलिसे मद्र-सतुल मदीना लिल बनात ऑन लाइन ﴾89﴿ मजलिसे ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या बराए इस्लामी बहनें ﴾90﴿ मजलिसे तिब्बी इलाज बराए इस्लामी बहनें ﴾91﴿ मजलिसे मालियात ﴾92﴿ मजलिसे तह़फ़्फ़ुज़े अवराक़े मुक़द्दसा ﴾93﴿ तख़स्सुस फ़िल्लु-ग़तिल अ़-रबिय्यह ﴾94﴿ मजलिसे म-दनी दर्स ﴾95﴿ मजलिसे इज़्दियादे हुब (म-दनी इन्आ़म नम्बर 55) ﴾96﴿ मजलिसे इज्तिमाई़ क़ुरबानी ﴾97﴿ मजलिसे दारुल मदीना कॉलेज व यूनीवर्सिटी ﴾98﴿ मजलिसे म-दनी कोर्स ﴾99﴿ मजलिसे सोश्यल मीडिया ﴾100﴿ मजलिसे राबित़ा बराए ताजिरान ﴾101﴿ मजलिस बराए तह़फ़्फ़ुज़े रिज़्क़ ﴾102﴿ मजलिसे ख़ुद कफ़ालत

6, जुमादल उख़्रा 1437 हि./16 मार्च 2016 ई.

www.dawateislami.net

ماخذومراجع

☆☆	قرآنِ کریم	کلامِ باری تعالیٰ	☆☆☆☆☆☆
نمبرشمار	کتاب	مصنف/مؤلف/متوفی	مطبوعہ
1	کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
2	خزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
3	صحیح البخاری	امام ابوعبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
4	سنن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۱۴ھ
5	سننِ ابی داؤد	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
6	المؤطا	امام مالک بن انس اصبحی حمیری، متوفی ۱۷۹ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
7	المعجم الکبیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۲ھ
8	الترغیب والترہیب	امام زکی الدین عبدالعظیم بن عبدالقوی منذری، متوفی ۶۵۶	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
9	مشکاۃ المصابیح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
10	مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	नं.	उ़न्वान	नं.
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	1	म-दनी अ़तिय्यात के बस्ते	
दा'वते इस्लामी के शो'बाजात		लगाने के म-दनी फूल	29
का मुख़्तसर तआ़रुफ़	2	बेनर का नमूना	34
राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की फ़ज़ीलत	7	मद्दाते वाजिबा और मद्दाते मख़्सूसा	
अ़तिय्यात जम्अ़ करने की फ़ज़ीलत	9	से मु-तअ़ल्लिक़ एह़तियातें	36
अ़तिय्यात में ख़ियानत पर वईद	11	झोली और बस्ते के लिये अल्फ़ाज़	
अमीरे अहले सुन्नत की त़रफ़ से		व एह़तियातें	42
ख़ुसूसी म-दनी फूल	12	स-दक़ाते नाफ़िला की झोली के	
अ़तिय्यात जम्अ़ करने की निय्यतें	13	मोह़तात़ अल्फ़ाज़	46
म-दनी अ़तिय्यात की अक़्साम	14	म-दनी अ़तिय्यात के बस्ते पर	
म-दनी अ़तिय्यात जम्अ़ करने के		सदा लगाने के मोह़तात़ अल्फ़ाज़	46
त़रीक़े और एह़तियातें	16	रसीद बुक के ह़वाले से अहम	
म-दनी अ़तिय्यात के लिये		हिदायात और एह़तियातें	47
मुलाक़ात के म-दनी फूल	24	नक़्दी (CASH) के मु-तअ़ल्लिक़	

www.dawateislami.net

उ़न्वान	नं.	उ़न्वान	नं.
अहम हिदायात और एह़तियातें	51	का पुर किया हुवा नमूना	83
चेक और बेंक के मु-तअ़ल्लिक़		क़सम के कफ़्फ़ारे की रक़म	
अहम हिदायात और एह़तियातें	58	वुसूल करने के म-दनी फूल	83
चन्द मज़ीद एह़तियातें	62	म-दनी अ़तिय्यात रसीद बराए	
चन्दे से मु-तअ़ल्लिक़ चन्द		ज़िम्मादारान	86
शर-ई मसाइल	64	म-दनी अ़तिय्यात जम्अ़ करवाने	
मर्हूमीन की नमाज़ों और रोज़ों		के लिये एकाउन्ट्स की तफ़्सील	88
के फ़िदये का मस्अला	68	दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के पते	
ज़िन्दा शैख़े फ़ानी के रोज़ों के		और फ़ोन नम्बर्ज़ 2016 सि.ई	91
फ़िदये का मस्अला	72	दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के	
शर-ई मस्अला	78	फ़ोन नम्बर्ज़ और मेइल एड्रेस	93
अ़तिय्यात की पुर (Fill) की हुई		दा'वते इस्लामी के ख़िदमते दीन	
रसीद का नमूना	82	के 102 शो'बाजात	94
क़सम के कफ़्फ़ारे के फ़ॉर्म		मआख़िज़ो मराजेअ़	100

www.dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है।

मक-त-बतुल मदीना
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com
www.dawateislami.net Mo. 091 93271 68200